जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

अंक 21वां

मार्च 2024

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

मेक इन इंडिया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

26 दिसंबर 2023 को माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह द्वारा आईएनएस इम्फाल की भारतीय नौसेना को कमीशनिंग।

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता

जलतरंग

20 अक्टूबर, 2023 को भारतीय नौसेना को पी15बी श्रेणी के तीसरे विध्वंसक 'इम्फाल' की सुपुर्दगी

मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 72 वीं बैठक में एमडीएल को वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट संगोष्ठी आयोजित करने के लिए प्रमाणपत्र से सम्मानित करते हुए हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (प) डॉ. राकेश कुमार पाराशर।

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक
श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

मुख्य परामर्शदाता
डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादक
श्री अरुण कुमार चान्द, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं कर्मचारी संबंध)
श्री श्रीनिवास सिन्हा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)
सुश्री जयंतिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी
श्री राजू कुमार चौधरी, हिन्दी अनुवादक

पत्रिका डिज़ाइन एवं मुद्रित: :
फोकस कम्युनिकेशन्स
104 सज्जद यसिन चेम्बर्स, 30-एफ, बोमंजी लेन,
फोर्ट, मुंबई- 400001
ईमेल: info@focuscommunications.co.in
मो.: 9820082352

प्रकाशक
राजभाषा अनुभाग
माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड,
डॉकयार्ड रोड, मुंबई - 400010
फोन: 22-23710456

विषय-सूची

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...	5
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश...	6
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश...	7
संपादकीय...	8
माझगांव की कहानी	9
श्री घनश्याम प्रजापति, प्रबंधक (योजना-पू. खं.)	
एमडीएल - देश के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता	10
श्री सौमित्र मिश्रा, मुख्य प्रबंधक (हल)	
कार्यालयी अनुवाद	13
सुश्री जयन्तिका मुखर्जी, राजभाषा अधिकारी	
एमडीएल में स्वच्छ भारत पहल	16
मानव संसाधन- समवाय टीम द्वारा संकलित	
सुरक्षित कार्य-स्थल	21
श्री परेश महतो, प्रबंधक (जनि-संरक्षा)	
जानिए	25
मोबाइल खो जाए, तो करें ये काम	
अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग	26
श्री पराग राजेन्द्र दुसाने, पीए कम क्लर्क (योजना-पू. खं.)	
डीज़ल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों हेतु वायु स्वतंत्र प्रणोदन प्रौद्योगिकी 'एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन' (एआईपी) प्रणाली	29
श्री रितु राज सिंह, उप प्रबंधक (तकनीकी सेवा)	
प्रेम रावत की जीवनी	32
श्री विवेक भारती, स्ट्रक्चरल फेब्रिकेटर (रूपांकन)	
शिक्षण के माध्यम के रूप में हिंदी	35
श्री श्रीनिवास सिन्हा, अमप्र (मा.सं. एवं रा.भा.)	
पगोडा	38
श्री राजेश हिंदुराव आंबवाड, प्रबंधक (वाणिज्य-पू. खं.)	
मेरा प्रिय दोस्त	41
श्री सिमनलाल आर्य, सहायक (राजभाषा अनुभाग)	
घमंडी बुद्धिमान	44
श्री कल्पेश अहिरे, स्ट्रक्चरल फैब्रिकेटर (यार्ड- 12652)	
सफर-मुंबई से लद्दाख और स्पीति घाटी का	44
श्री अविनाश ब्राम्हणे, सिनियर मेल नर्स (चिकित्सा विभाग)	
सभापति की जिम्मेदारी	45
श्री मनोज जाधव, क्लर्क ए (संरक्षा विभाग)	
बचपन की यादें, बात निकल जाने दो	47
श्री राजू कुमार चौधरी, हिंदी अनुवादक	
माझगांव डॉक और पनडुब्बी निर्माण	48
श्री कैलाश सिंह, प्रबंधक (हल-पू.खं.)	
पर्यावरण के प्रति हमारी वचनबद्धता	52
श्री नरेश गायकवाड, क्लर्क ए (मा.सं. क. सं.)	
संघर्ष	54
श्री सुनील राणे, क्लर्क ए (मा.सं. क. सं.- पू. खं.)	
परिश्रम का फल	56
श्री राजा बनोथू, पीए कम क्लर्क (पू. खं.)	
प्रमोद कुमार की यात्रा...	59
श्री प्रमोद कुमार, प्रबंधक (जनि-रूपांकन)	
राजभाषा संगोष्ठी वर्ष 2023-24	60
10K मैराथन वर्ष 2023-24	61
एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ	62

इस पत्रिका में व्यक्त विचार अनिवार्यत: कम्पनी के नहीं हैं।
यह पत्रिका केवल आंतरिक वितरण के लिए है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से...

मान्यवर,

सबसे पहले तो मैं आप सभी को नववर्ष (गुढीपाडवा) की अग्रिम ढेर सारी बधाईयाँ और शुभकामनाएँ देता हूँ। एक बार फिर माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका आपलोगों तक पहुंचाते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता और अपार खुशी का अनुभव हो रहा है। राजभाषा पत्रिका ही एक ऐसा माध्यम है जिससे मैं अपनी बात आप लोगों के सामने रख पाता हूँ। यह हमारी गृह पत्रिका आप लोगों के संरक्षण से ही इतना लम्बा सफर तय करने में सफल हो पायी है।

पत्रिका की खुबसूरती यह है कि यह अपने हर अंक में एक नयी ऊर्जा और नयी चेतना के साथ आती है और पनडुब्बी और युद्धपोतों के नये-नये आयामों से हमें अवगत कराती है। साथ ही नयी-नयी रचनाओं का संकलन भी इस पत्रिका में हमें देखने को मिलता है। मुझे खुशी है कि यह पत्रिका हर कसौटी पर खरी उतरती है। इस पत्रिका को आकर्षक, मनोरम एवं पठनीय बनाने के लिए इसमें सम्मिलित सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

ये आप लोगों के प्रयास और मेहनत का ही फल है कि आई.एन.एस इम्फाल की कमीशनिंग 26 दिसंबर, 2023 को माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह के करकमलों द्वारा हुई, जो कि एमडीएल के लिए बड़े ही गर्व की बात है। एमडीएल कार्य क्षेत्र में निपुण तो है ही इसके साथ ही वह अपने कर्मचारियों के स्वस्थ्य पर भी ध्यान देती है। इसलिए उनके लिए उचित चिकित्सा के साथ-साथ खेल के महत्व को भी उजागर किया है। कंपनी ने 10K मैराथन का आयोजन किया था, जो बहुत ही सफल और सुआयोजित कार्यक्रम रहा।

मैं आशा करता हूँ, कि जलतरंग का हर अंक अपने पिछले अंक से बेहतर हो और पाठकों का ज्ञान विस्तार होने के साथ-साथ मनोरंजन भी करे। पत्रिका की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

श्री संजीव सिंघल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) का संदेश...

एमडीएल की गृह पत्रिका "जलतरंग" के 21वें अंक का प्रकाशन करना मेरे लिए बड़े ही गर्व का विषय है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पत्रिका के प्रत्येक अंक ने अपनी गुणवत्ता को सिद्ध किया है, जिसका प्रमाण है कि प्रत्येक अंक पुरस्कृत किये गये हैं। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि कम्पनी की पत्रिका ने अपनी गुणवत्ता को कायम रखते हुए निरंतर प्रयास जारी रखा है तथा उसको अधिक उन्नत और सूचनापरक बनाने में प्रयत्नशील है।

हम केवल राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण नहीं करते हैं, बल्कि सरकार के आदेशों एवं नियमों का भी अच्छी तरह से पालन करते हैं। हम निरन्तर प्रयास कर रहे हैं कि ज्यादा से ज्यादा हम अपनी कंपनी का विकास करें और युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माण में जो हमारा प्रथम स्थान है वह हमेशा बना रहे। यह तभी संभव है जब हम एक-दूसरे के साथ मिल-जुल कर काम करें और एमडीएल को एक परिवार माने।

हमने पत्रिका के पिछले 20 अंकों में कई पुरस्कार प्राप्त किए जिसमें महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्राप्त कीर्ति पुरस्कार भी शामिल हैं। हम राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा नियमों और अधिनियमों का पालन कर रहें हैं और आगे भी हमें सरकार द्वारा जो निर्देश प्राप्त होगें उन नियमों का पालन हम पूर्णत: करेंगे।

उम्मीद है कि पत्रिका अपने उद्देश्य को पूरा करने में सफल होगी और इसी तरह उत्कृष्ट लेखों और विचारों को सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करेगी।

मैं राजभाषा अनुभाग और संपादन मंडल को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

वासुदेव

कमांडर वासुदेव पुराणिक, भानौ(नि)
निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) का संदेश...

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड की गृह पत्रिका "जलतरंग" के प्रकाशन के साथ मैं बहुत समय से जुड़ा हुआ हूँ और प्रत्येक अंक ने अपनी गुणवत्ता को सिद्ध किया है जिसका प्रमाण हैं कि प्रत्येक अंक को पुरस्कार प्राप्त होता रहा हैं।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि कम्पनी की पत्रिका ने अपनी गुणवत्ता को कायम रखते हुए निरंतर प्रयास जारी रखा है तथा उसको अधिक उन्नत और सूचनापरक बनाने में प्रयत्नशील है।

यह पत्रिका एमडीएल में उभरते प्रतिभा को उजागर करने का एक साधन मात्र है। इस पत्रिका के लेखकों पर जब आप ध्यान देंगे तो आपको पता चलेगा कि इस पत्रिका को सफल बनाने का योगदान केवल अधिकारीगण का नहीं रहा है बल्कि जो मजदूर एवं कर्मचारीगण है उनलोगों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इसे सफल बनाने का भरपूर प्रयास किया है। इससे यह प्रमाणित होता है कि एमडीएल अनेकता में एकता पर विश्वास रखती है। इसके अलावा एमडीएल अपनी 250वीं वर्षगांठ महोत्सव मना रही है। एमडीएल के कार्य पद्धति की प्रमुख विशेषता है कि यहाँ प्रत्येक कर्मचारी एवं अधिकारी अपने कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों के प्रति प्रतिबद्ध रहता है।

मैं इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यह संदेश देना चाहूँगा कि वह मुंबई महानगर के व्यस्त जीवन से कुछ पल हिंदी साहित्य पढ़ने और लिखने के लिए अवश्य निकालें। राजभाषा पत्रिका प्रकाशन करने की हमारी मूल भावना कार्यालयीन कार्य में हिंदी की दिनों-दिन प्रगति करना है। एमडीएल ने भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपना उद्देश्य पूर्ण करने में सफल होगी और इसमें प्रकाशित रचनाएँ सभी पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करेगी।

मैं राजभाषा अनुभाग की सराहना करता हूँ कि उन्होंने इतनी बढ़िया पत्रिका प्रकाशित करने का प्रयास किया और सफल हुए हैं।

संतोष कु. मल्लिक

डॉ. संतोष कुमार मल्लिक
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन)

संपादकीय

कंपनी की गृहपत्रिका 'जलतरंग' का 21वां अंक प्रकाशित होने पर मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है क्योंकि पत्रिका का प्रत्येक अंक विविधता के साथ प्रकाशित किया जाता है। ये पत्रिका की गुणवत्ता ही है जो 'ख' क्षेत्र की 62 सार्वजनिक उपक्रमों के बीच अपने लिए स्थान बनाने में अब तक सफल रही है।

कंपनी के कर्मचारियों की साहित्यिक रुचियों का प्रदर्शन और अभिव्यक्ति इसके माध्यम से सशक्त रूप में होती है। कंपनी में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक-सामाजिक कार्यों के साथ विभिन्न लेख जैसे पर्यावरण के प्रति वचनबद्धता, स्वच्छ भारत अभियान, पनडुब्बी निर्माण आदि को भी पत्रिका में प्रस्तुत किया गया है जो की यार्ड की प्रगति और वृद्धि में सहयोग करता है।

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व का राष्ट्रीय कर्तव्य निभाना कंपनी का नैतिक दायित्व है जिसे कंपनी बखूबी निभाती है। स्वच्छता के प्रति अपने दायित्वों का पालन करते हुए कंपनी ने अक्टूबर एवं दिसंबर में स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया और सफल रहे। कंपनी प्रबंधन कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है।

विगत वर्षों में हिन्दी का उल्लेखनीय विकास हुआ है। हिन्दी का दायरा विशाल है और इसके शब्दकोश में विभिन्न भाषा के शब्द समाहित किए गए है जो इसकी समृद्धि का द्योतक है। सरकार का हिन्दी के प्रति लगाव सकारात्मक है जिसका प्रभाव दैनिक कार्य में निरंतर लक्षित होता है।

श्री अरुण कुमार चान्द
महाप्रबंधक (मा. सं.)

माझगांव की कहानी

श्री घनश्याम प्रजापति
प्रबंधक (योजना- पूर्व खंड)

देशभर में कई अजीबो गरीब जगह हैं जो किसी न किसी खाशियत की वजह से दुनियाभर में मशहूर हैं। इनमें से कई जगहें अपने नाम की वजह से जानी जाती हैं। ऐसे ही एक जगह के बारे में आज हम आपको बताएंगे। ये जगह देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में है। हम बात कर रहे हैं मुंबई के माझगांव की। माझगांव बंदरगाह का नाम आपने सुना ही होगा, लेकिन कभी सोचा है कि आखिर इस जगह का नाम माझगांव कैसे पड़ गया? आइए माझगांव की कहानी आपको बताते हैं।

आपको बता दें कि मुंबई के 7 प्रमुख द्वीपों में से एक माझगांव है। इसके नाम को लेकर कई प्रचलित कहानियां हैं। मुंबई में रहने वाले अबोध Straying Around नाम से एक ब्लॉक चलाते हैं। उनके ब्लॉक से मिली जानकारी के अनुसार माझगांव शब्द माझगांव से लिया गया जिसका अर्थ मुंबई की क्षेत्रिय भाषा मराठी में होता है- मेरा गांव। इसके अलावा ये भी बताया जाता है कि माझगांव नाम मच्छा ग्राम से विकसित हुआ। इसका अर्थ है- मछली पकड़ने वाला गांव। माझगांव समुन्द्र के किनारें बसा हुआ है, इसलिए यहां भारी मात्रा में मछली पकड़ने का बिजनेस किया जाता है।

ब्लॉक से मिली जानकारी के अनुसार, यह एक प्राचीन पुर्तगाल बस्ती थी। यहां पुर्तगालियों के जमाने से व्यापार किया जा रहा है। अब यहां आयकर भवन फोर्ट माथा पकड़ी गांव, एक पुराना क्वार्टियर है, जहां कई पुरानी बस्तियां है। यहां एक पुराना किला है, जिसका निर्माण 1680 में हुआ था। यह किला वर्तमान में यूसुफ बाप्तिस्ता गार्डन में, भंडारवाडा पहाड़ी पर डॉकयार्ड रोड़ रेल्वे स्टेशन के बाहर स्थित है। ये किला पुर्तगालियों से लेकर अंग्रेजों तक का केन्द्र रहा था। इसी इलाकें में माझगांव गार्डन है, जहां आपको दुनिया के सातों अंग्रेजों की झलक देखने को मिलेगी।

माझगांव इलाके में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) है जो भारत में एक अंग्रेजी जहाज निर्माण और प्रतितट संरचना यार्ड है। यार्ड की स्थापना 18वीं शताब्दी में की गई थी। माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड रक्षा मंत्रालय के तहत भारत के अंग्रेजी रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम शिपयार्ड में से एक है। माझगांव यार्ड में 30,000 (DWT) तक के युद्धपोत, पनडुब्बी और व्यापारी जहाज बनाने की क्षमता है। यह यार्ड तेल की खोज के लिए बेलहेड प्लेटफॉर्म, प्रोसेस, प्रोडक्शन प्लेटफॉर्म और जैक अप रिग तैयार कर सकता है।

इन जगहों के लिए भी मशहूर अगर आप माझगांव घूमने जाते हैं, तो यहां भाऊचा धक्का आप को अपनी तरफ आकर्षित करेगा। यहां मुंबई का मशहूर मछली बाजार है। इसके साथ ही आपको यहां और भी कई तरह के ताजे से फूड्स खाने को मिल जाएंगे। इसके साथ ही माझगांव इलाकें में म्हातारपाखडी गांव पुर्तगाली शैली के कई घर बने हैं, जो आपको पुराने समय की कारीगर को दर्शाते हैं। इसके अलावा औपनिवेशिक काल में बनी चर्च आवर लेडी ऑफ द रोचरी चर्च है। वहीं माझगांव में पुराना शांत 'क्वान कुंग' मंदिर भी है, घर जाकर आपको अनोखी शांति का अहसास होगा।

एमडीएल - देश के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता

श्री सौमित्र मिश्रा
मुख्य प्रबंधक (हल)

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल), जिसे 'देश के पोत एवं पनडुब्बी निर्माता' के रूप में जाना जाता है, भारत के अग्रणी रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम शिपयार्डों में से एक है, जो रक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में संचालित होता है। हम मुंबई और न्हावा में अपनी समर्पित सुविधाओं पर युद्धपोतों और पनडुब्बियों के निर्माण, मरम्मत और नवीनीकरण का कार्य करते हैं।

1934 में अपनी स्थापना के बाद से, हमने एक प्रसिद्ध युद्ध-जहाज निर्माण यार्ड बनने की अपनी क्षमता को तेजी से बढ़ाया है जो देश की रक्षा को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। हमें देश में एकमात्र शिपयार्ड होने का अनूठा गौरव प्राप्त है जिसने भारतीय नौसेना के लिए विध्वंसक और पारंपरिक पनडुब्बियों का उत्पादन किया है। इसके अलावा, हम वीर और खुकरी श्रेणी के कार्वेट का निर्माण करने वाले भारत के पहले शिपयार्डों में से थे।

अग्रणी प्रौद्योगिकियों और आधुनिक उपकरणों में हमारे निरंतर निवेश ने युद्धपोतों के मॉड्यूलर निर्माण के लिए हमारी क्षमता को सुदृढ़ किया है। नवाचार और गुणवत्ता पर निरंतर ध्यान देने के साथ, हमने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों के लिए परिष्कृत उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन करने की क्षमता विकसित की है। हमें 2006 में 'मिनी-रत्न-I' का स्थान भी प्रदान किया गया है।

- सन 1774 में ड्राई डॉक का निर्माण किया गया।
- सन 1934 में एक निजी कंपनी के रूप में निगमित हुई।
- भारत सरकार द्वारा 1960 में अधिग्रहित हुई।
- 1972 में पहला फ्रिगेट, आईएनएस नीलगिरि सुपुर्द किया गया।
- 1984 में पनडुब्बी निर्माण कार्य आरंभ का उद्घाटन हुआ।
- 1992 में पहली भारतीय निर्मित पनडुब्बी, आईएनएस शल्की की कमीशनिंग किया गया।
- 1997 में प्रथम विध्वंसक, आईएनएस दिल्ली को कमीशनिंग किया गया।
- 1998 में जहाज निर्माण के लिए आईएसओ प्रमाणन प्राप्त किया।
- 2000 में अनुसूची 'बी' से अनुसूची 'ए' स्थिति में अपग्रेड किया गया।
- मिनी रत्न का पद 2006 में प्राप्त हुआ।

- 2009 में एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग और सिस्टम एप्लिकेशन और उत्पाद लागू किए गए।
- 2014 में माझडॉक आधुनिकीकरण परियोजना का **उद्घाटन** किया गया।
- 2015 में रक्षा मंत्रालय के साथ 4 फ्रिगेट्स के निर्माण और सुपुर्दगी के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए।
- 2016 में अलकॉक यार्ड में एक नई सबमरीन सेक्शन असेंबली कार्यशाला का **उद्घाटन** किया गया।
- 2017 में पहली स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी और 2019 में दूसरी पनडुब्बी सुपुर्द की गई।
- 2020 में एमडीएल बीएसई और एनएसई में सूचीबद्ध हुआ।
- तीन प्लेटफॉर्म सुपुर्द किए गए, जैसे 2021 में तीसरी और चौथी स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी और पहली मिसाइल विध्वंसक।
- मई 2022 में एक मिसाइल विध्वंसक और एक स्टील्थ फ्रिगेट की ऐतिहासिक डबल लॉचिंग की गई।
- अप्रैल 2022 में छठी पनडुब्बी 'वाघशीर' की लॉचिंग हुई और तीसरे स्टील्थ फ्रिगेट 'तारागिरी' का लॉचिंग सितंबर 2022 में हुआ।
- नवंबर 2022 में दूसरी पी15बी मिसाइल विध्वंसक, 'आईएनएस मोरमुगाओ' और दिसंबर 2022 में 5वीं स्कॉर्पीन पनडुब्बी 'आईएनएस वागीर' सुपुर्द की गई।
- जुलाई 2022 में आईएसओ 14001:2015 और आईएसओ ओएचएसएएस 45001:2018 (एचएसईएमएस) और अक्टूबर 2022 में आईएसओ/आईईसी 27001:2013 से मान्यता प्राप्त हुए।

स्वदेशीकरण प्रयास

कंपनी ने माननीय प्रधानमंत्री की "मेक-इन-इंडिया" पहल को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए नवंबर 2015 में एक समर्पित 'स्वदेशीकरण विभाग' की स्थापना की थी और इसके माध्यम से कंपनी सफलतापूर्वक भागीदार भारतीय उद्योग के साथ उन विभिन्न उपकरणों/वस्तुओं का स्वदेशीकरण/आयात प्रतिस्थापन करने में सक्षम रही है जिनका अन्यथा आयात किया जा रहा है।

कंपनी युद्धपोतों और पनडुब्बियों के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण उपकरणों/वस्तुओं का सफलतापूर्वक स्वदेशीकरण करने में सक्षम है। भारतीय उद्योग से स्वदेशी वस्तुओं की खरीद से न केवल सरकारी खजाने में विदेशी मुद्रा की पर्याप्त बचत होगी, बल्कि राष्ट्रीय क्षमता निर्माण में भी योगदान मिलेगा।

एक बड़ी छलांग के रूप में, "आत्मनिर्भर भारत" और "मेक इन इंडिया" के राष्ट्रीय मिशन के अनुरूप और पारंपरिक पनडुब्बियों के डिजाइन को स्वदेशी बनाने के उद्देश्य से, एमडीएल ने स्वदेशी पारंपरिक पनडुब्बी के डिजाइन और निर्माण का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरू किया। इसके अलावा, एमडीएल ने पारंपरिक पनडुब्बी डिजाइन के लिए नोडल एजेंसी बनने और भारतीय नौसेना, भारत सरकार की एजेंसियों और निजी उद्योगों के साथ सहयोग करने के लिए रक्षा मंत्रालय के समक्ष स्वेच्छा से काम किया है।

स्वदेशी हल डिजाइन और निर्माण के अतिरिक्त, 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम के तहत मौजूदा/भविष्य की पनडुब्बी परियोजनाओं के लिए उपकरणों के स्वदेशीकरण की एक मेगा योजना भी शुरू की गई है। इस दिशा में, एमडीएल ने पनडुब्बियों के निर्माण के लिए आवश्यक सभी 8000 उपकरणों और सामग्री का विश्लेषण किया है। इन 8000 घटकों/उपकरणों को 165 उपकरणों में मैप किया गया है। कुल 165 पनडुब्बी उपकरणों में से 35 का स्वदेशीकरण किया जा चुका है। इसके अलावा, मुख्य इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन मोटर सहित 26 उपकरणों के लिए प्रोजेक्ट स्पेसिफिक ऑर्डर (पीएसओ) जारी किए गए हैं और 31 अतिरिक्त आइटम ऑर्डर प्लेसमेंट के उन्नत चरण में हैं।

कार्यालयी अनुवाद

सुश्री जयन्तिका मुखर्जी
राजभाषा अधिकारी

भारत के संविधान 343(1) के अंतर्गत हिंदी को देवनागरी लिपि में राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के पश्चात से इसे राजकाज में सक्षम बनाने तथा निवर्तमान प्रशासनिक अंग्रेजी भाषा का स्थान दिलाने के लिए यह आवश्यक था कि तेजी से हिंदी को प्रशासनिक कार्य के विविध स्तरों, रूपों पर तैयार किया जाए ताकि सभी संवैधानिक तथा असंवैधानिक साहित्य को हिंदी में प्रस्तुत किया जा सके। इस प्रक्रिया को तीव्रतर करने के लिए राष्ट्रपति के विभिन्न आदेश तथा राजभाषा आयोग तथा संसदीय समिति तथा विविध राजभाषा अधिनियम 1963 तथा 1976 के लागू होने के कारण सरकारी प्रशासनिक कामकाज द्विभाषिक रूप में होने लगे। अत: कार्यालयी साहित्य का हिंदी में अनुवाद द्रुतगति से आरंभ हुआ।

कार्यालयी अनुवाद से तात्पर्य है – कार्यालय से संबद्ध साहित्य का अनुवाद। मोटे रूप से इसके अंतर्गत प्रशासनिक कार्यालय, सैनिक, अर्ध-सैनिक कार्यालय, डाक तार कार्यालय रेल कार्यालय, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन कार्यालय तथा संसदीय कार्यालय आदि आते हैं। कार्यालयी साहित्य मुख्यत: दो प्रकार का होता है। एक नेमी पत्राचार साहित्य जिसमें मसौदा टिप्पणी आते हैं एवं दूसरा संसद के प्रश्नों के जबाब, नियतकालिक प्रशासनिक प्रतिवेदन अधिसूचनाएं तथा संकल्प, सार्वजनिक सूचनाएं, समाचार पत्रों में प्रकाशित की जाने वाली प्रेस विज्ञाप्ति अथवा टिप्पणी। वस्तुत: कार्यालयी अनुवाद को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

i) **संविधानिक अनुवाद:** इसके अंतर्गत संविधान, अधिनियम, अध्यादेश, विधेयक, सांविधक नियमावलियों तथा उनके अनुपालन हेतु बनाए गए फार्मों, करारों आदि जैसी स्थायी प्रकृति की सामग्रियों का अनुवाद हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में किया जाता है। यह कार्य विधायी आयोग के जिम्मे है। इस वर्ग की अनुवाद सामग्री की प्रकृति स्थायी होती है।

ii) **असांविधिक अनुवाद:** इसके अंतर्गत संहिताओं, मैनुअलों आदि का अनुवाद होता है। प्रारंभ में यह कार्य केंद्रीय हिंदी निदेशालय को सौंपा गया था किंतु, 1970 में यह कार्य गृहमंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया गया। मार्च 1971 में 'केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो' की स्थापना के समय से यह कार्य ब्यूरों के जिम्में है। असांविधिक सामग्री को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में बांटा गया है-

क. गैर-तकनीकी सामग्री: इसके अंतर्गत सामान्य नियमावलियों, फार्म तथा रजिस्टर आते हैं। यह अनुवाद कार्य ब्यूरो के जिम्मे है।

ख. तकनीकी सामग्री: इसके अंतर्गत विशिष्ट संकल्पनाओं वाले मैनुअल, नियम पुस्तिकाएँ आदि आते हैं। इनका अनुवाद ब्यूरो द्वारा संबन्धित विभाग के विशेषज्ञों की सहायता से किया जाता है। तथापि अब डाक तार बोर्ड, रेल मंत्रालय तथा रक्षा मंत्रालय अपनी उपर्युक्त दोनों प्रकार की सामग्रियों का अनुभव विभागीय स्तर पर करवा कर ब्यूरो से पुनर्रीक्षित करवा लेते हैं। इनके अतिरिक्त लोकसभा एवं राज्यसभा सचिवालयों में भी संसद सदस्यों के अंग्रेजी भाषणों के हिंदी अनुवाद का विपुल कार्य होता है।

ग. अस्थायी महत्व की सामग्री: स्थायी प्रकृति की सामग्री संकल्पों सामान्य आदेश, अधिसूचनाएं, प्रेसविज्ञाप्तियों, प्रशासनिक रिपोर्ट, संसद के एक या दोनों सदनों के समक्ष पेश की जानेवाली सभी सामग्री का इसमें समावेश होता है। सरकार की प्रचार-प्रसार सामग्री, प्रेस टिप्पणी तथा प्रेस विज्ञाप्ति के रूप में समाचार पत्रों, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन को भेजा जाता है। कार्यालयीन अनुवाद के साधन एवं उसकी प्रक्रिया का व्यवहारिक पक्ष संक्षेप में इस प्रकार है :

1. अनुवाद के साधन: अनुवादक, अनुदित अथवा अनुवाद सामग्री शब्दकोश एवं हिंदी अनुवाद/राजभाषा/पुनरीक्षा अधिकारी आदि कार्यालयीन अनुवाद के साधन है।

i. **अनुवादक:** अनुवादक का मूल लेखक के बराबर योग्य होना अपेक्षित है किंतु कार्यालयी अनुवाद के संदर्भ में प्राय: ऐसा संभव नहीं होता। तथापि अनुवादक में अनुवाद करने की कुछ नैसर्गिक प्रतिक्षा होनी चाहिए और उसे अनुवाद हेतु प्रशिक्षण प्राप्त भी होना चाहिए। इसके अतिरिक्त व्याकरण, शब्दज्ञान, भाषा प्रकृति, स्वनिक एवं स्वनिमिक व्यवस्था आदि की दृष्टि से अनुवादक को स्त्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा पर बराबर एवं अपेक्षित अधिकार होना चाहिए।

ii. **अनुदित अथवा अनुवाद सामग्री:** अनुवाद हेतु नैसर्गिक प्रतिभा, प्रशिक्षण एवं अपेक्षित द्विभाषा की ज्ञान होने पर भी यदि अनुवाद/अनुदित सामग्री की विषयवस्तु का अपेक्षित ज्ञान न हो तो अनुवाद/पुनरीक्षण दोषयुक्त हो सकता है।

iii. **शब्दकोश या ज्ञानकोश:** अनुवाद के दौरान कोई संकल्पना न समझ आने पर कोई प्रतिशब्द न सूझने पर ज्ञानकोश/शब्दकोश अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। संदर्भ एवं आवश्यकता के अनुसार स्त्रोतभाषी, लक्ष्यभाषी, स्त्रोतलक्ष्यभाषी अथवा लक्ष्यस्त्रोतभाषी कोशों से सहायता ली जाती है।

2. कार्यालीन अनुवाद की प्रक्रिया: कार्यालीन अनुवाद

की प्रक्रिया को निम्नानुसार चरण बद्ध किया जा सकता है –

i. **मूल के पाठ की प्रक्रिया:** यह चरण मूलत: अर्थविज्ञान से संबद्ध है। इसके अंतर्गत अनूध सामग्री का मनोयोगपूर्ण पाठ किया जाता है तथा भाषा एवं विषय को कोश आदि संदर्भों की सहायता से समझा जाता है।

ii. **आत्मसात करने की प्रक्रिया:** इस चरण में मूल पाठ की आत्मा में लीन होकर उसे पूर्णरुपेण हृदयगम किया जाता है तथा अनूध सामग्री के संदर्भ में मूल लेखक की विचारधारा से पूर्ण तदात्म स्थापित किया जाता है।

iii. **पाठ विश्लेषण की प्रक्रिया:** उपर्युक्त मानसिक अवस्था प्राप्त कर लेने के बाद अनुवादक अपने विवेक के अनुसार स्थूल रूप से शब्द, पदबंध, वाक्य आदि के स्तर पर अनुवाद की भाषिक योजना बनाता है।

iv. **अंतरण प्रक्रिया:** यह अनुवाद प्रक्रिया का केंद्रीय चरण है। इस चरण में स्त्रोत भाषा की सामग्री को अनुवादक लक्ष्य भाषा की निकटतम सहज समतुल्य अभिव्यक्तियों में अंतरित करता है।

v. **परिस्कार प्रक्रिया:** इस चरण में अनुवादक भाषा के सहज प्रवाह, जीवंतता, शैली, वस्तुनिष्ठा, संप्रेषणीयता एवं दोषहीनता की दृष्टि से अनुदित सामग्री का परिस्कार करता है।

vi. **तुलन प्रक्रिया:** इस चरण में मूल से तुलना करके यह देखा जाता है कि विषय वस्तु को दृष्टि से किसी स्थल पर अर्थसंकोच, अर्थविस्तार, अर्थदिश एवं अर्थसंगीत का दोष न हो एवं संपूर्ण सामग्री का लक्ष्य भाषा के पाठक के मन पर वही प्रभाव पड़े जो मूल सामग्री का स्त्रोत भाषा के पाठक पर पड़ता हो। ध्वनि, लिपि, शब्द संरचना, अर्थछिटा, रूप, शैली, प्रयुक्ति तथा वाक्य के स्तरों पर समायोजन करना पड़ता है। यदि अनुवादक अनूध सामग्री के योग्य हो तो उपर्युक्त छ: चरणों से गुजर कर मूर्त हुआ अनुवाद वस्तुत: उत्कृष्ट अनुवाद होगा। अनुवाद की प्रक्रिया से गुजरने के दौरान ही अनुवाद से संबद्ध कठिनाइयाँ सामने आ जाती है। चूंकि कार्यालयी अनुवाद सूचना प्रधान होता है अत: उसमें अभिव्यक्ति की शैली या शैली की अभिव्यक्ति की समस्याएँ नहीं खड़ी होती। कार्यालयी अनुवाद में कुछ दूसरे प्रकार की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। कार्यालयी अनुवाद में सबसे विकट समस्या पारिभाषिक शब्दों की है। अंग्रेजी के अगणित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी समानक तैयार नहीं हो पाये हैं। इसके अलावा परिभाषा कोश का अभाव, ज्ञानकोशों का अभाव, मिलते-जुलते अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दावली में अखिल भारतीय स्वरूप का अभाव, बहुअर्थी अभिव्यक्तियों के अनुवाद की समस्या, अंग्रेजी संक्षेपों की समस्या, उचित पुनरीक्षा का अभाव, विषम अभिज्ञ अनुवादकों का अभाव, आदि अनेक समस्याएँ भी हैं।

एमडीएल में स्वच्छ भारत पहल

(मा.सं – समवाय टीम द्वारा संकलित लेख)

प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान का पालन करते हुए एमडीएल, एमडीएल और उसके आस-पास जन जागरूकता आंदोलन बनाने में सकारात्मक प्रभाव डालने और सभी स्तरों पर कर्मचारियों के साथ-साथ आस-पास के क्षेत्र में लोगों की भागीदारी के माध्यम से समाज में स्थायी व्यवहार परिवर्तन लाने में सक्षम रहा है। एमडीएल में स्वच्छ भारत पखवाड़ा 01 दिसंबर से 15 दिसंबर तक मनाया गया।

अभियान के एक अंग के रूप में, एमडीएल ने स्वच्छता ही सेवा अभियान का आयोजन किया था और स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। अभियान के तीन स्तर थे-

i) शिपयार्ड के भीतर ii) निकटवर्ती क्षेत्र
iii) ग्रामीण क्षेत्र।

क) एमडीएल परिसर के भीतर गतिविधियां:

एमडीएल ने पोस्टर, साइनेज, बोर्ड, स्टैंडी आदि के प्रदर्शन के माध्यम से कर्मचारियों के बीच स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा की गई। ब्लॉक प्रभारियों की नियुक्ति करके परिसर के भीतर साफ-सफाई सुनिश्चित करना इस अभियान का एक प्रमुख उद्देश्य था। कर्मचारियों में स्वच्छता के प्रति रुचि पैदा करने के लिए 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' का आयोजन किया गया। इस अभियान के दौरान ई-कचरा, भारी मलबा हटाना, जल निकासी लाइनों की मरम्मत एक नियमित गतिविधि बनी। एमडीएल ने यार्ड की सफाई में व्यावसायिकता के लिए सुविधा प्रबंधन सेवाओं को नियुक्त किया गया।

ख) एमडीएल परिसर के बाहर की गतिविधियाँ: -

एमडीएल ने एमडीएल के आस-पास की 4.5 कि.मी. लंबी सड़कों की दैनिक सफाई के लिए एक विशिष्ट सफाई-एजेंसी को नियुक्त किया था। आस-पास के समुदाय में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के बारे में जागरूकता पैदा की गई। सीएमडी और निदेशकों के नेतृत्व में नियमित अंतराल पर सभी कर्मचारियों द्वारा केंद्रीकृत श्रमदान किया गया। निकटवर्ती जय भीम नगर में सामुदायिक शौचालय ब्लॉक का निर्माण पूरा किया गया। निकटवर्ती पूर्वी फ्रीवे के नीचे चारदीवारी और सड़क डिवाइडर का सौंदर्यीकरण किया गया। एमडीएल ने न्हावा ग्राम पंचायत को कचरा डिब्बे भी प्रदान किए, ताकि ग्राम पंचायत में प्रभावी तरीके से कचरा प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके।

एमडीएल ने स्वच्छ भारत मिशन को अक्षरश: लागू किया है और इसके अनुरूप, एमडीएल की परिधि में स्थित क्षेत्रों में स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए एक परियोजना की पहल की गई। स्थानीय नगर निकाय से सहमति लेने के बाद, एमडीएल ने आस-

पास के क्षेत्रों में सफाई सुनिश्चित किया। इसके अलावा एमडीएल में नियमित अभियान आयोजित किए गए, जिसमें कर्मचारी उच्चतम स्तर की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए आस-पास के क्षेत्रों में श्रमदान में उत्साहपूर्वक भाग लिए।

कंपनी परिसर के आस-पास के क्षेत्रों को साफ रखने के लिए, माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने अपने आस-पास के परिधीय वार्डों की सफाई का काम शुरू किया। इस परियोजना के तहत, एमडीएल के आस-पास के परिधीय वार्डों की सड़कों को साफ करने के लिए एक बाह्य एजेंसी को लगाया गया था।

ग्रामीण/अन्य क्षेत्रों में गतिविधियाँ:

भारत सरकार के स्वच्छ भारत अभियान के अनुरूप, एमडीएल ने स्वच्छता क्षेत्र में एक मेगा परियोजना पूरी की थी, इसके तहत अपशिष्ट प्रबंधन के लिए नंदुरबार जिले (महाराष्ट्र के आकांक्षी जिलों में से एक) के पांच नगर परिषदों / शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) का मशीनीकरण किया गया। इस परियोजना के तहत, एमडीएल द्वारा उचित अपशिष्ट प्रबंधन के लिए संबंधित नगर परिषदों को वैक्यूम एम्प्टीयर मशीन, ऑटो टिपर, रोड स्वीपर मशीन, नाली सफाई मशीन, मोबाइल शौचालय आदि जैसी मशीनों और उपकरणों की आपूर्ति की गई।

स्वच्छता अभियान 3.0.

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, रक्षा उत्पादन विभाग के अनुसरण में रक्षा मंत्रालय आई.डी. क्रमांक 8(56)/2022-डी(कोर्ड/डीडीपी) दिनांक 14 सितम्बर 23 द्वारा "स्वच्छता अभियान 3.0" मनाने का निर्देश दिया गया था।

तदनुसार, एमडीएल ने कंपनी के आस-पास के क्षेत्रों में स्वच्छता और इसके लिए स्थानीय नागरिकों को जागरूक करने के लिए विभिन्न आउटरीच गतिविधियां आयोजित की हैं।

एमडीएल के भीतर और आस-पास के क्षेत्रों में 01.10.2023 से 31.10.2023 तक स्वच्छता अभियान (श्रमदान) आयोजित किया गया और विभिन्न आउटरीच गतिविधियाँ आयोजित की गईं। आउटरीच गतिविधियाँ का विवरण इस प्रकार हैं:

1) स्क्रैप की पहचान

2) अभिलेखों को अलग करना और पुराने अभिलेखों की छंटाई करना

3) एमडीएल आवासीय परिसर में स्वच्छता अभियान

4) आस-पास के सार्वजनिक क्षेत्रों जैसे सड़क और बाजार क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान (श्रमदान)।

5) प्लॉगिंग (एकल उपयोग वाले प्लास्टिक को चुनना) और प्लास्टिक कचरे का संग्रह

क) एमडीएल ने 01.10.2023 को **"एक तारीख, एक घंटा, एक साथ"** अभियान शुरू करके महात्मा गांधी को 'स्वच्छांजलि' दी।

ख) एमडीएल ने बड़े उत्साह के साथ स्वच्छता ही सेवा

3.0 अभियान शुरू किया। इस अवसर पर श्रीमती यामिनी जाधव, विधायक (भायखला क्षेत्र) मुख्य अतिथि थीं। कमांडर वासुदेव पुराणिक, निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) ने एमडीएल के अधिकारियों और उनके परिवारों, विशेषकर बच्चों के साथ स्वच्छता अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ग) आवासीय क्षेत्र में वृक्षारोपण भी किया गया।

दिनांक 06.10.2023 को स्क्रैप सामग्री को विभिन्न स्थानों से एकत्र किया गया और एमडीएल में कार्यशाला क्षेत्र में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अलावा, सर्विस रोड के क्षेत्र की सफाई का कार्य पूरा किया गया। उक्त अभियान में 10 समर्पित कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

क) स्क्रैप सामग्री का संग्रह

सफाई के पहले

सफाई के बाद

एमडीएल के वर्कशॉप क्षेत्र में सभी वॉशरूम और रेस्ट रूम की सफाई के लिए विशेष अभियान चलाया गया। इसके अलावा, एमडीएल ने जयभीम नगर के नजदीकी इलाके के बाहरी परिसर में शौचालयों की सफाई की।

उपरोक्त साफ-सफाई गतिविधियाँ जेट स्प्रे मशीनों की सहायता से की गईं। उक्त अभियान में कुल 22 समर्पित कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

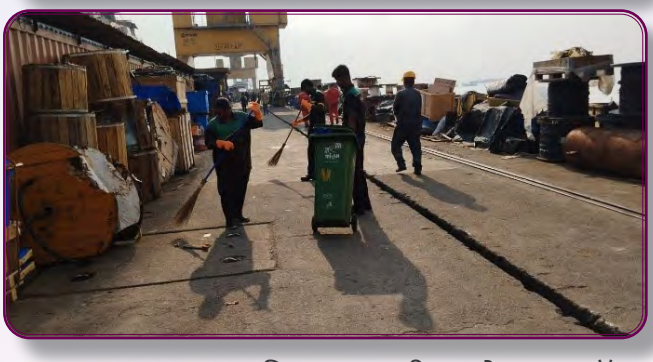

स्वच्छता अभियान एमडीएल के अलकॉक यार्ड स्थित पुरानी कैंटीन में चलाया गया, जिसमें पुरानी और अप्रयुक्त सामग्रियों को एकत्र किया गया और स्क्रैप यार्ड क्षेत्र में रखा गया। कैंटीन क्षेत्र के बाहर भी सफाई अभियान चलाया गया। सभी पुराने रिकॉर्ड ठीक से रखे गए थे। पुराने कैंटीन क्षेत्रों को साफ-सुथरा रखा गया। अभियान में कुल 15 कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

03 दिसंबर 23: कर्मचारियों के बच्चों के लिए निबंध और ड्राइंग प्रतियोगिताएं

- स्वच्छता पखवाड़ा के चलते विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसकी शुरुआत 01 दिसंबर को स्वच्छता शपथ से की गई।
- 02 दिसंबर को श्रमदान, 03 दिसंबर को एमडीआरसी हॉल में कर्मचारियों के बच्चों के लिए स्वच्छता का महत्व विषय पर निबंध एवं ड्राइंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों के कुल 85 बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- 04 दिसंबर को कंपनी के विभिन्न यार्डों में स्क्रैप निपटान किया गया।
- 05 दिसंबर को विभिन्न यार्डों और कार्यालयों में पुराने रेकॉर्ड और फाइलों का निपटान किया गया।
- 06 दिसंबर को कंपनी परिसर में वृक्षारोपण का कार्य किया गया। दैनिक जीवन में स्वच्छता के महत्व पर एक सेमिनार का आयोजन सागरिका सभागार में किया गया जिसमें कुल 84

कर्मचारियों ने सक्रिय भागीदारी की।

- 09 दिसंबर को एमडीएल के आवासीय क्षेत्र में मच्छरों और कीड़ों की रोकथाम के लिए कीटनाशकों का छिड़काव किया गया।
- 11 दिसंबर को विभिन्न शॉप और कार्यालयों और एमडीएल के आस-पास के क्षेत्रों में सफाई अभियान चलाया गया।
- 13 दिसंबर को एमडीएल के आवासीय क्षेत्र के जल निकासी प्रणाली को साफ किया गया।
- 14 दिसंबर को प्रशिक्षुओं के लिए मिनी मैराथन का आयोजन किया गया जिसमें कुल 280 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।
- कर्मचारियों के बच्चों को निबंध और ड्रॉविंग प्रतियोगिता के विजेताओं को एमडीआरसी हॉल में वितरित किया गया।

14 दिसंबर 23 - प्रशिक्षुओं के लिए मिनी मैराथन

दिनांक 14.12.2023 को एमडीएल में मिनी मैराथन का आयोजन किया गया जिसमें 280 प्रशिक्षुओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। आयोजनों के समापन के बाद विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये गये।

सुरक्षित कार्य-स्थल

श्री परेश महतो
प्रबंधक (जनि-संरक्षा विभाग)

प्रतिदिन होने वाले कार्यों में सावधानी बरतना ही सुरक्षा कहलाती है। सुरक्षा की उत्पादन में उपयोगिता उसी प्रकार से है, जिस प्रकार से फूल में खुशबू की, अर्थात् बिना खुशबू का कोई फूल शोभा नहीं देता, उसी प्रकार बिना सुरक्षा के होने वाले उत्पादन लाभ नहीं देता। वह खतरनाक एवं हानिकारक साबित होता है। कार्य-स्थल पर होने वाली दुर्घटनाओं के मुख्य कारण जैसे कि खराब गृह व्यवस्था, असुरक्षित कार्य स्थितियाँ, लापरवाही, आवश्यक कार्य-निर्देशों का उल्लंघन, रखरखाव में लापरवाही, लंच टाईम में जल्दी, सुरक्षा उपकरण न पहनना, दक्षता व अनुभव की कमी, मानसिक एवं शारीरिक थकान के कारण ध्यान में कमी, स्वयं को अधिक दक्ष समझना, उत्तेजना, भाषा समझने में दिक्कतें ड्यूटी पर नशा करना आदि हैं।

व्यावसायिक सुरक्षा के विषय में कुछ गलत धारणायें :

- दुर्घटनाएँ तो होती हैं, वे तो होंगी ही, यह तो भाग्य का खेल है। यदि किसी के भाग्य में दुर्घटनाग्रस्त होना लिखा है तो उसे कोई मानवीय प्रयत्न टाल नहीं सकता है।
- औद्योगिक सुरक्षा, प्रबंधकों का दायित्व है, हमारा नहीं।
- सुरक्षा के नियम प्रबंधकों द्वारा कानून का पालन करने के लिए बनाए गए हैं हमें उनसे कुछ लेना-देना नहीं।
- जहाँ उत्पादन होगा वहाँ दुर्घटनाएँ तो होंगी ही।
- उत्पादन व सुरक्षा साथ-साथ नहीं चलते, सुरक्षा को एक तरफ करके ही आप उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।
- सुरक्षा के नियम नए कामगारों एवं अनाड़ियों के लिए होते हैं। असुरक्षित तरीके से काम करना वीरता एवं कार्यकुशलता की निशानी है।
- हम यहाँ पर 40 वर्षों से काम कर रहे है, इतने वर्षों में कभी दुर्घटना नहीं हुई, तो अब कैसे होगी।

दुर्घटनाओं से नुकसान:

दुर्घनाओं की कीमत न केवल कामगार व प्रबंधन को चुकानी पड़ती है बल्कि समाज व देश को भी चुकानी पड़ती है, परन्तु इसका सबसे अधिक प्रभाव पीड़ित व्यक्ति पर ही पड़ता है।

दुर्घटनाओं की कीमत जैसे कि दर्द, चिंता, मानसिक तनाव, अंग-भंग होना, दैनिक कार्यों में दिक्कतें, आय का नुकसान, अस्पताल के खर्च व खुशियों का समापन आदि पीड़ित व्यक्ति को चुकानी पड़ती है।

किसी भी दुर्घटना के दो मुख्य कारण होते हैं-

- **असुरक्षित स्थितियाँ।**
- **असुरक्षित कार्य।**

असुरक्षित स्थितियाँ जैसे कि-अपर्याप्त रोशनी, शोर, मशीन के घूमने वाले हिस्सों पर गार्ड ना लगा होना, रास्तें में वस्तुओं का पड़ा होना, फर्श पर चिकनाई का पड़ा होना, मशीन व औजारों का होना, असुरक्षित ढ़ंग से रखरखाव करना, काम करते समय अत्यधिक ढिले कपड़े पहनना आदि।

ऊंचाई की जगह में पहुँचने के लिए किसी भी प्रकार के सीढ़ी को प्रदान करना। असुरक्षित कार्य जैसे कि सुरक्षा साधनों का प्रयोग न करना, अनाधिकृत रूप से मशीन चलाना, गलत औजारों का प्रयोग करना, मशीनों को आवश्यकता से अधिक तेज गति से चलाना, ध्यानपूर्वक तथा बताए गए तरीकों से काम न करना, वस्तुओं को उठाने व ले जाने में गलत साधनों का उपयोग करना। ऊँचाई पर कार्य करने वाले सेफ्टी बेल्ट का इस्तेमाल नहीं करना इत्यादि। दुर्घटनाओं का विश्लेषण हमें यह बताता है कि 95% दुर्घटनाएं असुरक्षित कार्यों के कारण, 03 प्रतिशत दुर्घटनाएं असुरक्षित स्थितियों के कारण एवं 02 प्रतिशत दुर्घटनाएं प्राकृतिक आपदाओं के कारण होती है।

सुरक्षित कार्य-व्यवस्था

बहुत सी दुर्घटनाएँ कार्यस्थल पर औजार तथा अन्य अनावश्यक सामान आदि के इधर-उधर बिखरें होने के कारण, फर्श व सीढ़ियों पर तेल, ग्रीस व चिकना तरल पदार्थ फैल जाने से या सतह ऊंची- नीची होने के कारण हो जाती है। इन सब कारणों की वजह से गंभीर चोंटे लग जाती हैं। इससे लोग अपंग हो जाते हैं, तथा कभी-कभी जान तक चली जाती है। और इन सब कारणों से कामगारों का मनोबल तथा आत्मविश्वास भी दुर्बल हो जाता है।

हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम सुरक्षित कार्य व्यवस्था के तरीकों को समझें तथा काम करते समय उनका पालन करें। अत: हमें अपने कार्य स्थल पर सुरक्षित कार्य व्यवस्था बनाने व उसे कायम रखने के लिए निम्न बातों को समझना तथा कार्य करते समय उनका पालन करना चाहिए-

- कार्य स्थल पर आने वाले सभी औजारों तथा अन्य सामान आदि को रखने के लिए उचित जगह नियत करें तथा उनको काम करने के बाद नियत जगह पर ही रखें। ऐसा करने से समय की बचत होती है, मानसिक तथा शारीरिक थकान नहीं होती है, तथा उत्पादन तेजी से बढ़ता है।
- अनुपयोगी सामान, टूटे तथा खराब औजार एवं कल पुर्जों आदि को कार्य स्थल पर कभी न रहने दें, क्योंकि ये दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। इनको सुनिश्चित स्थान पर पहुँचा दें। ऐसा करने से रूकावटें दूर होगी तथा काम करने के लिए अधिक स्थान मिलेगा।
- आने जाने के रास्तें, कार्य स्थल के आस-पास तथा सीढ़ियों में रूकावट एवं टूट-फूट, गंदगी,

चिकनाई आदि दुर्घटनाओं के कारण होते हैं,अत: हमें तुरन्त इस बारे में जिम्मेवार व्यक्ति को सूचित करना चाहिए, जिससे कि इन कमियों को समय रहते दूर किया जा सके।

- आपात स्थिति में प्रयोग होने वाले चिन्हों व निकास मार्गों के बारे में जानकारी लें तथा उन्हें साफ सुथरा तथा अवरोध मुक्त रखें, जिससे कि आपात स्थिति में उनका बिना रूकावट प्रयोग कर सकें।
- साफ-सथुरा कार्य-स्थल सुरक्षित एवं स्वस्थ रखने वाला होता है। कूड़ा करकट तथा वेस्ट मैटेरियल को उचित स्थान पर रखे मैटेरियल कूडेदान में ही डालें।
- कार्य-स्थान पर धूम्रपान करना, इधर-उधर थूकना, पेशाब करना, कार्यस्थल के वातावरण को गंदा करता है। मूत्रालय एवं थूकदान का प्रयोग कर वातावरण को साफ-सूथरा बनाए रखना।
- खराब कार्य व्यवस्था से होने वाली हानियों तथा अच्छी कार्य व्यवस्थता से होने वाले लाभों के बारे में जानकारी लें तथा औरों को भी बताएँ व शिक्षित करें।
- इस प्रकार अच्छी कार्य व्यवस्था बनाकर हम दुर्घटनाओं के दर को कम कर सकते हैं एवं उत्पादन व उत्पादकता को बढ़ा सकते हैं तथा हम स्वयं एक सुरक्षित, स्वस्थ्य एवं खुशहाल जीवन का आनन्द उठा सकते हैं।

मशीनों पर सुरक्षा-

हमारे उद्योगों में अधिकतर काम मशीनों द्वारा ही किए जाते हैं। ये साधारण एवं छोटी मशीनों से लेकर बहुत बड़ी स्वचालित मशीनों तक होती हैं। यह मशीने हमारी रोजी-रोटी का साधन है तथा देश में प्रगति एवं खुशहाली का प्रतीक है। इन मशीनों पर कार्य करते समय अनेक प्रकार के खतरें एवं जोखिम हैं। इन खतरों एवं जोखिमों को हम सही कार्य-प्रणाली की जानकारी तथा उसका पालन करके नियंत्रित कर सकते हैं।

मशीन पर सुरक्षित तरीके से काम करने संबंधी कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ-

- मशीन के पुर्जों की, सुरक्षा उपकरणों की ऑन-आफ स्विचों की जाँच करें। यदि इसमें किसी प्रकार की कमी हो तो मशीन ऑपरेटर अपने सुपरवाईजर को सूचित करें। मशीन व औजारों का नियमित रख-रखाव करें।
- मशीन ऑयल लेवल की जॉच करें, मशीन पर ऑयल व ग्रीस डालते समय मशीन को पूर्ण रूप से बन्द होना चाहिए।
- क्लैम्पिंग उपकरणों की कार्य प्रणाली की पूर्णतया जाँच करें।
- सही उपकरणों की सही जाँच कर, प्रयोग करें।
- मशीन चलाने से पहले सुरक्षा गार्ड सही जगह पर है, इसकी जाँच कर लें।
- कंट्रोल लीवर की सही स्थिति की जाँच करें।

- चिप्स ब्रेकर व चिप्स गॉर्ड की जाँच करें।
- मशीनों पर कार्य करते समय सभी उपकरणों, औजारों एवं क्लैम्पिंग चाबी को सही जगह पर रखें।
- भारी वस्तु को मजबूती से क्लैम्प करते समय भार उठाने वाले उपकरणों से सहारा तब तक दिये रखें, जब तक कि वस्तु को मजबूती से क्लैम्प न कर दिया जाये।
- चलती मशीन के पट्टे को हाथ से नहीं खींचे।
- चलते हुए बेल्ट तथा अन्य कल-पुर्जों के पास न जायें व उससे छेड़छाड़ न करें।
- कार्य करने से पहले हमें कार्य की तथा सुरक्षा नियमों एवं सुरक्षित कार्य प्रणाली की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
- मशीन की सफाई या मरम्मत करते समय यह सुनिश्चित कर लें कि बिना आपकी इजाजत के मशीन न चले तथा 'मशीन की सफाई जारी है' का बोर्ड अवश्य लगाये।
- मशीन पर एक से अधिक व्यक्ति एक साथ कार्य कर रहे है, तो सिग्नलों के बारे में अवश्य जान लें।
- मशीन को बिजली नहीं मिलने की स्थिति में मेंन स्विच एवं कंट्रोल एलीमेंट्स को शीघ्र बंद करें, जिससे बिजली आने पर मशीन तुरन्त स्टार्ट न हो।
- मरम्मत का कार्य करते समय यदि किसी रेलिंग या मशीन गार्ड को निकालना पड़ता है तो कार्य पूरा होने पर गार्ड को वापस लगाना अनिवार्य करें।
- मशीनों के पास कभी न लेटें, नींद आ जाने पर भी दुर्घटना हो सकती है।
- मशीनरी का संचालन तभी करें जब सुरक्षा उपाय ठीक से स्थापित और समायोजित किए गए हों।
- किसी भी नई मशीन के ऑपरेटिंग मैनुअल को ध्यान से पढ़ें, भले ही आप पहले से ही बुनियादी बातों से परिचित हों। हमेशा दिए गए निर्देशों का पालन करें।
- कभी भी मशीन के सुरक्षा उपाय न हटाएं और न ही उनके आस-पास जाने की कोशिश करें।
- किसी भी संभावित समस्या का पता लगाने के लिए उपयोग से पहले मशीनरी और उसके फिक्स्चर और फिटिंग का दृश्य रूप से मूल्यांकन करें।
- सुरक्षा उपायों वाली ऐसी मशीन का उपयोग न करें जो अनधिकृत या क्षतिग्रस्त हो।
- मशीन के आस-पास किसी के भी लाभ के लिए दृश्यमान स्थानों पर आसानी से समझ में आने वाले सुरक्षा चेतावनी संकेत लगाएं।
- यदि आपको मशीन सुरक्षा समस्या का पता चलता है, तो तुरंत इसकी रिपोर्ट करें।

जानिए

मोबाइल खो जाए, तो करें ये काम

1. **अपनी सिम बंद कराए:** मोबाइल फोन खोते ही सबसे पहले अपने सेल्युलर ऑपरेटर से संपर्क कर, अपनी सिम बंद कराएं। इससे आपके फोन का गलत इस्तेमाल नहीं किया जा सकेगा। साथ ही किसी डेस्कटॉप पर जाकर ईमेल आदि पर मौजूद अपनी तमाम गोपनीय जानकारी से जुड़ी डिटेल डिलीट कर दें।

2. **गूगल मैप्स और लोकेशन हिस्ट्री लें:** सारे एंड्राइड डिवाइस में इन्बिल्ट लोकेशन ट्रेकिंग सर्विस होती है। यह आपके हर मूवेंट को ट्रैक करते हैं। गूगल अकाउंट से आप अपने पीसी पर साइन इन कर फोन की लोकेशन का पता लगा सकते हैं, बशर्ते चोर ने फोन को ऑफ न कर दिया हो। यदि ये ऑफ नहीं किया गया, तो आपको लोकेशन की पूरी जानकारी मिलती रहेगी।

3. **सोशल साइट्स के पासवर्ड बदलें:** जब आपको पता लगे कि आपका मन फोन चोरी या कहीं खो गया है तो जल्द से जल्द अपने फेसबुक, टिवटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल साइट्स के पासवर्ड बदल दें। इससे आपके अकाउंट का गलत इस्तेमाल नहीं हो पायेगा।

4. **डेटा का बैकअप ले लें:** यदि आप अपने फोन में सेव कॉन्टेक्ट, फोटो और विडियों को खोना नहीं चाहते तो अपने फोन पर मौजूद सारे डेटा का बैकअप ले लें। इसके बाद जब आपका फोन कहीं खो या चोरी हो जाता है, तो आप आसानी से अपने डेटा का बैकअप ले सकते हैं।

5. **डिडेक्शन और सब्सक्रिप्शन बंद करें:** किसी भी तरह का कोई ऑटोमेंटिक डिडेक्शन है, तो उसे डिएक्टिवेट कर दें। साथ ही कोई ऑनलाइन सर्विस ले रखी है, तो उसका सब्सक्रिप्शन भी डिएक्टिवेट कर दें।

6. **पुलिस में लिखाएं शिकायत:** जब आप मोबाइल खरीदें तो उसके बॉक्स पर अंकित आईएमईआई नंबर को किसी सुरक्षित स्थान पर नोट करें। आपका मोबाइल यदि चोरी होता है, तो इस नंबर से चोर तक पहुँचा जा सकता है।

इस तरह आप स्वयं को आने वाली मुशिबतों से बचा सकते हैं और अपने आप को सुरक्षित भी रख सकते हैं। सावधान रहें और सुरक्षित रहें यही हमारे विभाग का लक्ष्य है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग

श्री पराग राजेन्द्र दुसाने
पीए कम क्लर्क (योजना-पूर्व खंड)

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को उपयोग में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है। महात्मा गांधी विश्व स्तरीय भाषा उस भाषा को कहते है जिसका प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है और जिस भाषा के लोग दूसरे भाषा या अतिरिक्त भाषा के रुप में सीखते हैं। हिंदी भाषा की बढ़ती जा रही लोकप्रियता का अंदाजा इसी से ही लगाया जा सकता है कि विश्व भर में हिंदी सीखने वालों की संख्या में जबरदस्त इजाफा हुआ है। पिछले 8 सालों में हिंदी बोलने की मांग में 50 की वृद्धि हुई है। भारत देश के चतुर्दिश विकास को दृष्टिगत रखते हुए अनिवासी भारतीय भी अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जिससे भारत में या तो वे निवेश कर सकें अथवा वापस लौट आयें।

वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग काफी हो रहा है। उसकी शुरुआत दो दशक पहले ही हो चुकी थी। 1980 और 1990 के दशक में भारत में उदारीकरण, वैश्विकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई परिणामस्वरुप अनेक विदेश बहुराष्ट्रीय कंपनियों भारत में आई तो हिंदी के लिए एक खतरा दिखाई दिया था, क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आई अधिक मुनाफ़े की भाषा है।

भारतीय भाषाएं नदियां है

और हिंदी महानदी।

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी को थोपा था। शताब्दियों बाद भी अंग्रेजों के तात्कालीन उपनिवेश में अंग्रेजी अभी तक जनभाषा नहीं बन पाई है। इसके अतिरिक्त भारत के राज्यों में हिंदी एक संपर्क भाषा के रुप में अपनी जड़े जमा चुकी है सिर्फ यहीं तक नहीं बल्कि पाकिस्तान, बांगलादेश, नेपाल, दक्षिण एशिया, खाड़ी के देशों आदि में भी हिंदी अपनी लोकप्रियता में सतत वृद्धि करती जा रही है। यद्यपि वर्तमान में चीनी भाषा अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है परन्तु जल्द ही चीनी भाषा का स्थान हिंदी ग्रहण कर लेगी क्योंकि विश्व में भारतीय चाहे तामिलनाडु के हो, केरला या ओडिशा के हों अथवा किसी अन्य भारतीय राज्य के जब यह सब विदेशों में आपस में मिलते हैं तो इनकी संपर्क भाषा हिंदी होती

है। इसके अतिरिक्त विदेशों में हिंदी पठन-पाठन का भी चलन जोर पकड़ने लगा है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

-महात्मा गांधी

राष्ट्र को विश्व बिरादरी अपेक्षाकृत ज्यादा महत्व और स्वीकृति देती है तथा उसके प्रति अपनी निर्भरता में इजाफा पाती है तो उस राष्ट्र की तमाम चीजें स्वत महत्वपूर्ण बन जाती हैं। ऐसी स्थिति में भारत की विकासमान अंतर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी के लिए वरदान-सदृश है। यह सच है कि वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारत की बढ़ती उपस्थिति हिंदी की हैसियत का भी उन्नयन कर रही है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्वभाषा का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उसकी स्वीकार्यता और व्याप्ति अनुभव की जा सकती है। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और यथावसर उसे विश्व भाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्व भाषा का स्वरूप-विश्लेषण कर लें।

पुरे राष्ट्र की आशा है,
हिंदी अपनी भाषा है।
जात-पात के बंधन को तोड़े,
हिंदी सारे देश को जोड़े॥

जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं, तो पाते हैं कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्राय सभी महाद्वीपों पर उतरती है। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रों-जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है मैं किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान प्रकट हो रही है।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है,
जिसने मात्र विदेशी होने के कारण
किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

वर्तमान उत्तर भारत आधुनिक परिवेश में विशाल जनसंख्या भारत और चीन के साथ-साथ हिंदी और चीनी के लिए भी फायदेमंद सिद्ध हो रही है। हमारे देश में 1980 के बाद 80 करोड़ से ज्यादा बच्चें पैदा हुए हैं जो विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षित हो रहे हैं। वे सन् 2025 तक विधिवत प्रशिक्षित हो रहे हैं। अपनी सेवायें देने के लिए विश्व के समझ उपलब्ध होंगे। दूसरी ओर जापान की साठ प्रतिशत से ज्यादा आबादी साठ साल पार करके बुढ़ापे की और बढ़ रही है। यही हाल आगामी पंद्रह सालों में अमेंरिका और यूरोप का भी होने वाला है। ऐसी स्थिति में विश्व का सबसे तरूण मानव संसाधन होने के कारण भारतीय पेशेवरों की तमाम देशों में लगातार मांग बढ़ेगी। जाहिर है कि जब भारतीय पेशेवर भारी तादाद में दूसरों देशों में जाकर उत्पादन के स्त्रोत बनेंगे वहाँ की व्यवस्था परिचालन का सशक्त पहिया बनेंगे तब उनके साथ हिंदी भी

जाएगी। ऐसी स्थिति में जहाँ भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की प्रक्रिया में होगा वहाँ हिंदी, स्वत: विश्वमंच पर प्रभावी भूमिका का वहन करेगी। **जो भाषा भारत एवं विश्व के लोगों के दिलों पर राज करती है वह भाषा हिंदी है।**

हिंदी विश्व के प्राय: सभी महात्वपूर्ण देशों के विश्व विद्यालयों में अध्ययन में भागीदार है। अकेले अमेंरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिंदी का पठन-पाठन हो रहा है। आज जब 21वीं सदी में वैश्विकरण के दबावों के चलते विश्व की तमाम संस्कृतियाँ एवं भाषाएं आदान-प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही हैं, तो हिंदी इस दिशा में विश्व मानवता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहु-सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की भूमिका निभा रही है। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुआ है। उसने सदा-सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिंदी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक संबंध निर्मित करने की रही है। वर्तमान समय भारत और हिंदी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का द्योतन कर रहा है और हम सबसे यह अपेक्षा कर रहे हैं कि हम जहाँ भी हैं, जिस क्षेत्र में भी कार्यरत हैं वहाँ ईमानदारी से हिंदी और देश के विकास में हाथ बटाएँ। सारांश यह कि हिंदी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रेसर है। वह विश्व स्तर पर बहुत तेजी से फैल रही है।

आज स्थिति यह है कि गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से हिंदी का काव्य साहित्य अपने विविधता एवं बहुस्तरीयता में संपूर्ण विश्व में संस्कृति काव्य को छोड़ कर सर्वोपरि है। पद्मावत, रामचरित मानस, तथा कामयानी जैसे महाकाव्य विश्व की भी फ्रेंच, रूसी तथा अंग्रेजी के लगभग समकक्ष है।

आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ-सामाग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाएँ। इसके लिए लगातार प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है, जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराईयों तक महसूस करें और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हों। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हों, ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिए हिंदी को सही मायने में विश्व की सबसे शक्तिशाली और बहुप्रयुक्त भाषा होने के बावजूद यदि हिन्दी प्रतिष्ठा सहित संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा नहीं बन पाई है तो यह विश्व के हर छठे व्यक्ति के मानवधिकार का उल्लंघन है। अंत हमें एकजुट होकर हिंदी को उसका स्वाभाविक अधिकार दिलाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

सुविचार

महानता कभी न गिरने में नहीं है, बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है।

कन्फ्यूशियस

डीज़ल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों हेतु वायु स्वतंत्र प्रणोदन प्रौद्योगिकी 'एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन(एआईपी)' प्रणाली

श्री रितु राज सिंह
उप प्रबंधक (तकनीकी सेवा)

लगभग विश्व के 10 देश एआईपी प्रौद्योगिकी विकसित कर चुके हैं या विकसित करने के करीब हैं तथा लगभग 20 देशों के पास एआईपी पनडुब्बियाँ मौजूद हैं। भारत के रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) ने एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) प्रणाली का अंतिम विकास परीक्षण किया है, जो डीज़ल इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों के लिये महत्त्वपूर्ण है।

प्रमुख बिंदु:

एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) प्रणाली:

पनडुब्बियाँ अनिवार्य रूप से दो प्रकार की होती हैं: पारंपरिक और परमाणु ।

पारंपरिक पनडुब्बियाँ डीज़ल-इलेक्ट्रिक इंजन का उपयोग करती हैं, जिससे उन्हें ईंधन दहन के लिये वायुमंडलीय ऑक्सीजन प्राप्त करने हेतु लगभग दैनिक रूप से समुद्री सतह पर आने की आवश्यकता होती है। यदि कोई पनडुब्बी 'एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) प्रणाली' से लैस है तो पनडुब्बी को सप्ताह में केवल एक बार ऑक्सीजन लेने की आवश्यकता होगी।

स्वदेश में विकसित एआईपी जो 'नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला' (NMRL) के प्रमुख मिशनों में से एक है, नौसेना के लिये डीआरडीओ की महत्त्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक माना जाता है। इस परियोजना का उद्देश्य भारत की स्कॉर्पीन श्रेणी की पनडुब्बी आईएनएस कलवरी को वर्ष 2023 तक इस प्रौद्योगिकी से जोड़ना था।

वायु स्वतंत्र प्रणोदन:

एआईपी पारंपरिक गैर-परमाणु पनडुब्बियों के लिये एक तकनीक है।

(क) पारंपरिक पनडुब्बियों और परमाणु पनडुब्बियों के बीच मुख्य अंतर बिजली उत्पादन प्रणाली का होता है। परमाणु पनडुब्बियाँ (जैसे- आईएनएस अरिहंत, आईएनएस अकुला) इस कार्य हेतु परमाणु रिएक्टरों का प्रयोग करती हैं और पारंपरिक पनडुब्बियाँ (जैसे प्रोजेक्ट -75 आईएनएस कलवरी और प्रोजेक्ट -75 क्लास सबमरीन) डीज़ल-इलेक्ट्रिक इंजन का उपयोग करती हैं।

(ख) हालाँकि परमाणु ऊर्जा संचालित पनडुब्बियों को गहरे समुद्र में संचालन के लिये महत्त्वपूर्ण

माना जाता है, पारंपरिक डीज़ल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियाँ तटीय सुरक्षा और तट के करीब संचालन के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।

फ्यूल सेल/ईंधन सेल आधारित एआईपी प्रणाली:

- ईंधन सेल आधारित एआईपी में इलेक्ट्रोलाइटिक ईंधन सेल केवल पानी के साथ हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के संयोजन से ऊर्जा उत्पादन करता है जिससे समुद्री प्रदूषण करने वाले अपशिष्ट उत्पाद कम उत्पन्न होते हैं। ये सेल अत्यधिक कुशल होते हैं और इनमें गतिमान पुर्जे नहीं होते हैं, इस प्रकार ये सेल यह सुनिश्चित करते हैं कि पनडुब्बी में ध्वनि का कम उत्सर्जन हो।

एआईपी के लाभ और हानि:

लाभ:

- डीज़ल इलेक्ट्रिक पनडुब्बी की मारक क्षमता पर एआईपी का बल गुणक प्रभाव डालता है क्योंकि यह नाव की पानी के अंदर रहने की क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है।
- हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार की एआईपी प्रणाली हैं, NMRL का फ्यूल सेल आधारित एआईपी अद्वितीय है क्योंकि पनडुब्बी पर ही हाइड्रोजन उत्पन्न होता है। ईंधन सेल आधारित एआईपी अन्य प्रौद्योगिकियों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करती है।
- एआईपी तकनीक एक पारंपरिक पनडुब्बी को सामान्य डीज़ल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों की तुलना में अधिक समय तक जलमग्न रखती है, इस प्रकार उनकी घातकता और गोपनीयता कई गुना बढ़ जाती है। सभी पारंपरिक पनडुब्बियों को अपने जनरेटर चलाने के लिये सतह पर उतरना पड़ता है जो उसकी बैटरी को रिचार्ज करते हैं और नाव को पानी के नीचे कार्य करने में सक्षम बनाते हैं। हालाँकि जितनी अधिक बार एक पनडुब्बी सतह पर आती है, शत्रुओं द्वारा इसकी निगरानी की संभावना उतनी ही अधिक बढ़ जाती है।
- डीज़ल-इलेक्ट्रिक नौकाओं द्वारा दो से तीन दिनों की तुलना में एआईपी किसी पनडुब्बी को लगभग 15 दिनों से अधिक समय तक पानी के अंदर रखने में सक्षम है।

हानि:

- एआईपी स्थापित करने से नावों की लंबाई और वज़न बढ़ जाता है, इसके लिये जहाज़ पर दबावयुक्त तरल ऑक्सीजन (LOX) भंडारण और तीनों प्रौद्योगिकियों हेतु आपूर्ति की आवश्यकता होती है।
- MESMA (ऑटोनॉमस सबमरीन एनर्जी मॉड्यूल) और स्टर्लिंग इंजन के गतिमान भागों से कुछ ध्वनिक शोर उत्पन्न होता है जिस कारण पनडुब्बी की इकाई लागत लगभग 10% बढ़ जाती है।

नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला:

नौसेना सामग्री अनुसंधान प्रयोगशाला (NMRL)

डीआरडीओ के तहत काम करने वाली प्रयोगशालाओं में से एक है, जिसमें बुनियादी अनुसंधान के साथ-साथ कई क्षेत्रों (धातुकर्म, पॉलिमर, सिरेमिक, कोटिंग, जंग और विद्त सुरक्षा, समुद्री जैव प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विज्ञान) में अनुप्रयोग-उन्मुख प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

उद्देश्य:

- नौसेना पनडुब्बी और ईंधन सेल प्रौद्योगिकियों के लिये एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन (एआईपी) प्रणाली विकसित करना।
- भारतीय नौसेना के लिये सभी श्रेणियों की सामग्री और प्रौद्योगिकियों हेतु वैज्ञानिक समाधान प्रदान करना।
- भारतीय नौसेना हेतु रणनीतिक सामग्रियों पर अनुसंधान परियोजनाएँ शुरू करना।

वर्तमान में भारत के पास उपलब्ध पनडुब्बियाँ:

- भारत में 16 पारंपरिक डीज़ल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियाँ हैं, जिन्हें एसएसके (SSKs) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। पी-75 के तहत अंतिम पाँच कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों के चालू होने के बाद यह संख्या बढ़कर 23 हो जाएगी।
- भारत के पास दो परमाणु बैलिस्टिक पनडुब्बी भी हैं जो सबमर्सिबल शिप बैलिस्टिक मिसाइल न्यूक्लियर (Submersible Ship Ballistic Missile Nuclear-SSBN) के रूप में वर्गीकृत हैं।
- 30 वर्ष की परियोजना के तहत पी-75। के पूरा होने तक भारत के पास छह डीज़ल-इलेक्ट्रिक, छह एआईपी-संचालित और छह परमाणु हमले वाली पनडुब्बियाँ होने का अनुमान है।

प्रोजेक्ट-75 इंडिया:

जून 1999 में कैबिनेट कमेंटी ऑफ सिक्योरिटी (CCS) ने 30 वर्षीय पनडुब्बी निर्माण योजना को मंज़ूरी दी थी जिसमें वर्ष 2030 तक 24 पारंपरिक पनडुब्बियों का निर्माण करना शामिल था।

पहले चरण में उत्पादन की दो श्रृंखलायें स्थापित की जानी थीं- पहली, पी-75; दूसरी, पी-75आई। प्रत्येक श्रृंखला को छह पनडुब्बियों का उत्पादन करना था।जबकि छह पी-75 पनडुब्बियाँ डीज़ल-इलेक्ट्रिक हैं, उन्हें बाद में एआईपी तकनीक से सुसज्जित किया जा सकता है।

इस परियोजना में 43,000 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से अत्याधुनिक वायु-स्वतंत्र प्रणोदन प्रणाली से लैस छह पारंपरिक पनडुब्बियों के स्वदेशी निर्माण की परिकल्पना की गई है।

इस लेख को लिखने का उद्देश्य यह है कि भारत के पास उपलब्ध पनडुब्बियाँ का विवरण एवं पनडुब्बी में उपयोग की जाने वाली एआईपी प्रौद्योगिकी का जानकारी आप सभी से साझा किया जा सके।

(इस लेख की सामग्री पत्र सूचना कार्यालय एवं इंडियन एक्सप्रेस दैनिक समाचार पत्र से लिया गया है।)

प्रेम रावत की जीवनी

श्री विवेक भारती
स्ट्रक्चरल फेब्रिकेटर (रूपांकन)

यह एक विश्वविख्यात अध्यात्मिक गुरु हैं। इनका जन्म 10 दिसम्बर 1957 ई. में उत्तरी भारत के अध्यात्मिक नगर हरिद्वार (जो पहले उत्तर प्रदेश में था वर्तमान में उत्तराखण्ड) में हुआ था। प्राख्यात अध्यात्मिक गुरु हँस जी महाराज इनके पिता थे। प्रेम रावत ने अपने गृहनगर देहरादून में सेंट जोसेफ अकादमी प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई की। चार साल की उम्र में उन्होंने अपने पिता की सभाओं में बोलना शुरु किया और 6 वर्ष की उम्र में उनके पिता ने उन्हें ज्ञान की तकनीकें सिखाई।

ये एक विशेष रुप से ध्यान लगाने वाले अभ्यास का ज्ञान देते हैं। ये व्यक्तिगत संसाधन की खोज जैसे अन्दरूनी शक्ति, चुनाव अभिमूल्यन आदि पर आधारित शांति की शिक्षा देते हैं। पिछलें चार दशक से शांति का संदेश पूरे विश्व में लोगों तक पहुंचा रहे हैं। उनका कहना है कि-

"हर मनुष्य के अन्दर एक बहुत ही सुन्दर अनुभव है, जहाँ पहुंचकर हम परम शान्ति और आनंद को महसूस कर सकते हैं। उस अनुभव तक पहुंचने के लिए मैं आपकी मदद कर सकता हूँ।''

ये दिव्य संदेश परिषद के संस्थापक के है, जिसे बाद में 'डिवाइन लाइट मिशन' के नाम से जाना गया। 1966 ई. में पिता के स्वर्गवास के बाद लोगों ने 8 वर्ष की उम्र में प्रेम रावत को सतगुरु (सच्या गुरु) बना लिये। 13 वर्ष की उम्र में प्रेम रावत ने पश्चिम की यात्रा की और उसके बाद युनाइटेड स्टेट में ही घर ले लिया।

पहले अपने पिता के अनुयायियों के बीच "संत जी" से जाने, जाने वाले प्रेम रावत ने अब के नाम "गुरु महाराज जी" की उपाधि धारण कर ली है। इस तरह अन्य लोग उन्हें "बालयोगेश्वर" (यानि जन्माजात संत या योगियों के जन्मजात स्वामी) कहते हैं। युवावस्था और अध्यात्मिक शीघ्रता उस समय से प्रेम रावत ने अपने सप्ताहांत और स्कूल की छुट्टियाँ अपने पिता की तरह यात्रा में बिताई और ज्ञान, आतंरिक शांति के विषय पर दर्शको को संबोधित किया।

प्रेम रावत को उनके महान कार्य के लिए संसार के कई देशों में सम्मानित किया गया है। उन्होंने संसार के 90 से अधिक देशों में लोगों को संबोधित किया है। पूरी दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों और सामाजिक संगठनों द्वारा तथा तिहाड़ जेल में भी उन्हें नियमित रूप से आमंत्रित किया जाता है। उनका संदेश का अनुवाद 70 भाषाओं में किया गया है, जिसे 200 से भी ज्यादा देशों में उपलब्ध कराया जाता है।

महाराज जी अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद सामाजिक कार्यों में भी रुचि लेते हैं। उनके द्वारा स्थापित संस्था 'प्रेम रावत फाउण्डेशन' ने संसार में अनेक जगह लोगों की मदद की है। भारत में राज विद्या केन्द्र संस्था द्वारा दिल्ली और रॉची में समय-समय पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जाता है। प्रेम रावत ने राँची के निकट वनटोली गाँव में एक जन भोजन कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इसके तहत् करीब 500 बच्चों और 200 वयस्को को हर रोज पौष्टिक भोजन बाँटा जा रहा है।

उनकी विश्व प्रसिद्ध पुरस्कृत कार्यक्रम (words of Pence) उनके संदेश की उपग्रह टेलिविजन के माध्यम से प्रसारित कर रही है। दक्षिणी और उत्तरी अमेंरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, एशिया और पैसिफिक के 50 देशों और 48 भाषाओं में हर हफ्ते उनका संदेश लोगों तक पहुँच रहा है। भारत में यह संदेश 10 क्षेत्रीय भाषाओं में प्रतिदिन 16 घंटे प्रसारित होता है। इसे सप्ताहिक रूप में 7000 केन्द्रों में दिखाया जाता है। वर्डम ऑफ पीस ग्लोबल फाउंडेशन महाराज जी की शांति प्रयास उनका संदेश और उनकी कहांनियाँ, समाचार, वर्तालाप की एक लेख और चित्रमाला प्रस्तुत करती है।

महाराज जी पूरे भारतवर्ष के कई शहरों में लगातार लोगों को संबोधित कर रहे हैं। छोटे-छोटे ऑडिटोरियम से लेकर बड़े-बड़े स्टेडियम तक गाँव-कस्बों से लेकर बड़े-बड़े शहरों तक हर कार्यक्रम में लोग उनके संदेश को बहुत ही ध्यान से सुनते हैं और आनंद लेते हैं। हर वर्ष उनके कार्यक्रम में आने वाले श्रोताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। नवम्बर 2023 में बिहार राज्य के गया जिला में हुये कार्यक्रम लगभग 5-6 लाख श्रोता भाग लिये थे।

भले ही श्रोताओं की संख्या लगातार बढ़ रही है लेकिन उनका संदेश आज भी सीधे हर उस व्यक्ति के लिए है जो उन्हें सुनने आते हैं, जिन लोगों को इस संदेश में दिलचस्पी है महाराज जी उन्हें चार क्रियाएं देते हैं, जिसे आत्म-ज्ञान भी कहते हैं। इनके अभ्यास द्वारा मनुष्य की वृतियाँ एकाग्र होकर अन्दर की और मुड़ती है। मनुष्य अपने स्वयं का अनुभव प्राप्त करता है और अनुपम तरीके से जीवन का सच्चा आनन्द लेता है। ज्ञान मार्ग में तैयार करने के लिए महाराज जी ने 'ज्ञान कुंजी' संकलित की है। महाराज जी ने इन्हें एक अनमोल

उपहार के रूप में नि:शुल्क देते हैं।

प्रेम रावत एक विश्व प्रसिद्ध शांति के शिक्षक और सबसे अधिक बिकने वाली किताबों के लेखक है। दुनिया भर में शांति और मानवता के क्षेत्र में इन्हें कई प्रकार के आवार्ड से सम्मानित भी किया गया है। प्रेम रावत का उल्लेख गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में किया गया है। इनके पुस्तक "स्वयं की आवाज" (HEAR YOUR SELF) एक लेखक के लिए पुस्तक पढ़ने पर सबसे बड़ा दर्शक वर्ग 114,704 है और यह 2 अप्रैल 2023 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत में प्रेम रावत (यू. एस. ए.) द्वारा हासिल किया गया था। यह कार्यक्रम लखनऊ के माता रमाबाई अंबेडकर मैदान में आयोजित किया गया था। एक और गिनीज विश्व रिकॉर्ड इन्हें हाल ही में मिला है। 26 नवम्बर 2023 को भारत के एक व्याख्यान में प्रेम रावत (यू. एस. ए.) द्वारा 375,603 लोग उपस्थित हुए थे।

प्रेम रावत के सतसंग के कुछ शब्द-

"शांति संभव है" (PEACE IS POSSIBLE)

"भगवान ध्यारे अन्दर है।"

विधि हारे हर जाको ध्यान करत है, मुनि जन सहम अंगरी।
सोई हंस तेरे बर माही, अलख पुरुष अविनाशी ।।

अर्थात्- ब्रह्मा, विष्णु और महेश जिनका ध्यान करते हैं वह अंश आपके भी अंदर मौजूद है, आप भी उस अविनाशी का आनंद ले सकते हैं।

तीन बातें:

1. किसी का अपमान नहीं करना चाहिए।

2. यदि कोई आपका अपमान करे तो आपको बुरा नहीं लगना चाहिए।

3. यदि आपको बुरा लग भी जाय, तो बदले की भावना न रखें।

"आत्म ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी।
मृग नाभी में है कस्तुरी वन-वन फिरे उदासी ॥"

अर्थात्- जब मनुष्य को अपने अंदर का ज्ञान नहीं होता है तब मनुष्य कभी मथुरा जाता है तो कभी काशी। हिरण के नाभी में कस्तुरी होती है लेकिन हिरण को ये बात पता नहीं रहता है जिसके कारण वह इस जंगल से उस जगंल में उदास घुमता फिरता है।

"श्वांस- श्वांस सुमिरण करो, वृथा श्वांस मत खोय।
को जाने इस श्वांस का आवन होय ना होय ॥

अर्थात्- जिस तरीके से रोज तुम स्नान करते हो, भोजन करते हो, उसी तरीके से अगर रोज तुम इस ज्ञान के भजन का अभ्यास करो तो तुम्हारे अन्दर वह ज्योति वह प्रकाश फैलेगी जिससे यह जीवन सफल होगा।"

आप इस बात को समझिए और अनुभव कीजिए कि यह जीवन आपको जो मिला है यह आपके लिए सब कुछ है। यह आपके लिए सबसे बड़ा उपहार है। इससे बड़ा आशीर्वाद कोई हो ही नहीं सकता है।"

"जिसको हम खोजना चाहते हैं, उसको हम अपने मन से पकड़ने की, अपने विचारों से पकड़ने की, कोशिश करते हैं। वह विचारों से पकड़ी नहीं जा सकती क्योंकि वह अनुभव करने की चीज है।"

शिक्षण के माध्यम के रूप में हिंदी

श्री श्रीनिवास सिन्हा,
अमप्र (मा.सं. एवं रा. भा.)

'जिस राष्ट्र के पास अपनी संस्कृति नहीं होती, वह अंधा होता है, जिस राष्ट्र में अपना साहित्य नहीं होता, वह बधिर होता है और जिस राष्ट्र की अपनी भाषा नहीं होती, वह राष्ट्र गूँगा होता है।' अंग्रेज शासकों की कुनीति के अनुसार यदि किसी राष्ट्र के इतिहास को और उसकी जनभाषा को भ्रष्ट कर दिया जाए तो उसे शताब्दियों तक पराधीन रखा जा सकता है। दुर्भाग्यवश लॉर्ड मैकाले का वह दु:स्वप्न भारत में साकार हो गया। उसने अपने योजनाबद्ध षडयंत्र द्वारा हमारी राष्ट्रीय स्वातंत्र्य चेतना को निर्मूल कर दिया और भारत में ऐसे करोड़ों 'काले अंग्रेज' पैदा कर दिए, जो अंग्रेजी शासन की समाप्ति के पश्चात भी आज अंग्रेजियत और अंग्रेजी भाषा के पक्षधर बने हुए हैं। जनतंत्र के उदय के साथ जब उन्होंने इस 'राष्ट्र भारती' को चैतन्यपूर्ण देखा तो उनका 'इंद्रासन' डगमगाने लगा। अपने आधिपत्य को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने चक्रव्यूह की रचना शुरू की। तब से राष्ट्रभाषा का प्रश्न एक राजनीतिक समस्या बना हुआ है। आज राष्ट्रीय जीवन की गतिविधि में भाषा की समस्या दुराक्रांत हो गई है। इस साधारण निर्णय को तर्कों और विकल्पों के ऊहापोह द्वारा जकड़ दिया गया है। त्यागपत्रों के छदम आचरण द्वारा गृहयुद्ध और जनांदोलन की प्रतारणा की जा रही है। राष्ट्रीय विघटन का 'हौआ' दिखाकर इसे भरसक स्थगित किया जा रहा है और आज साठ वर्षों के उपरांत भी इसका भविष्य अनिश्चित घोषित कर दिया गया है।

भाषा का प्रश्न भावना का प्रश्न है। सत्संकल्प द्वारा ही इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। भाषा न केवल विचार-विनिमय का माध्यम होती है, न केवल अभिव्यक्ति का साधन होती है, अपितु वह राष्ट्रीय संस्कृति की पोषक अस्मिता होती है। अपने उदगार अविकल रूप से अपनी ही भाषा में शब्दबद्ध हो पाते हैं। अपनी वाणी में ही उन्हें समुचित अर्थवत्ता प्राप्त होती है। विदेशी भाषा में अनुवादित अथवा रूपांतरित होकर वे अनुभूतियाँ काफी विकलांग हो जाती हैं। उनका अर्थापन भी प्राय: त्रुटित हो जाता है। गुरुदेव वसिष्ठ को 'उस्ताद वसिष्ठ', सीतारानी को 'बेगम सीता' और 'प्राणनाथ' को 'मास्टर' कह देने से इन मूल शब्दों की गरिमा निस्संदेह बाधित या आहत होती है। प्रत्येक राष्ट्र की सांस्कृतिक शब्दावली का निर्माण लोक-चेतना द्वारा वहाँ की भौगोलिक स्थिति और सामाजिक परिवेश के अनुकूल होता है, जो उसी शब्दावली द्वारा ही ध्वनित हो सकता है। दूसरी भाषा द्वारा मात्र अर्थाभास ही हो सकता है और प्राय: अनर्थ हो जाता

है। अस्तु, भाषा का प्रश्न राष्ट्रीय संस्कृति से अनुस्यूत है। राष्ट्र और संस्कृति के प्रति निष्ठावान प्रत्येक नागरिक का यह पुण्य अनुष्ठान है कि जिस प्रकार इस देश को विदेशी शासन से मुक्त कराया गया, उसी प्रकार राष्ट्रीय जीवन को विदेशी भाषा से भी परित्राण दिलाएँ।

वर्तमान शासनारूढ़ दल में अंग्रेजियत के प्रति जो प्रबल मोह है, उसके बड़े गंभीर कारण हैं। नौकरशाही के उस युग में इनके रक्त में जो सामंतवादी संस्कार प्रविष्ट हुए और जनसाधारण से स्वयं को श्रेष्ठ समझने की जिस दुर्भावना से वे ग्रस्त हुए; वही अंग्रेजी के प्रति इनके इस अंधानुराग का मूल कारण है। हिंदी यदि जनता की भाषा (ले मैन लेंग्वेज) है, तो यह विशिष्ट वर्ग उसका प्रयोग क्यों करे? इससे तो उसका वैशिष्ट्य खंडित हो जाएगा! अंग्रेजी, शासकों की भाषा रही है, अत: उसके व्यवहार द्वारा इस तथाकथित अभिजात वर्ग को आधिपत्य-सुख का अनुभव होता है। हिंदी भाषियों को इसके विपरीत आत्महीनता का अनुभव होता है, क्योंकि वह साधारण वर्ग की और विशेषत: शासित वर्ग की भाषा रही है। ये मनोग्रंथियाँ भाषा की समस्या के मूल में आज भी विद्यमान हैं और वे ही सिद्धांत का कवच धारण करके यत्र-तत्र प्रकट होती है। भारत की राज्यसत्ता जब जनसाधारण को सौंपी गई और उसने भाषा-अधिकार की माँग की तो एक वितंडावाद खड़ा कर दिया गया। समसामयिक जीवन में विघटन की जो प्रक्रिया चल रही है, वह इसी भाषा-नीति के कारण ही। हिंदी-विरोधी इस अवसरवाद का उपयोग करते हुए प्राय: कहते हैं कि हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं के प्रचार से राष्ट्रीय एकता अरक्षित हो जाएगी और संपर्क-सूत्र टूट जाएगा। उनके मतानुसार देश को एकता के सूत्र में संगुंफित करने वाली एकमात्र भाषा अंग्रेजी ही है (जो दो-तीन प्रतिशत भारतीयों द्वारा बोली, लिखी, समझी और पढ़ी जाती है)। राष्ट्रीय एकता से उनका तात्पर्य संभवत: उसी अंग्रेजियत के अनुयायी शासनारूढ़ दल की एकता से है। इससे बड़ी विडंबना हो नहीं सकती कि राष्ट्र के शत-प्रतिशत व्यक्तियों की भावनात्मक एकता की उपेक्षा की जाए और इन अल्पसंख्यकों की सुख-सुविधा की, सुरक्षा की गारंटी दी जाए।

दक्षिण में हिंदी-विरोध का कारण और भी गूढ़ है। केंद्रीय सेवाओं तथा संघीय प्रतियोगिता-परीक्षाओं में अंग्रेजी को माध्यम-भाषा बनाए रखने के कारण दक्षिणी और बंगाली प्रतियोगी हिंदी भाषा-भाषियों की अपेक्षा अधिक सफलता प्राप्त कर रहे हैं। अंग्रेजी उनके बीच द्वितीय मातृभाषा की भाँति प्रचलित है। उस पर इतना अधिकार प्राप्त है कि वे सुगमतापूर्वक अथवा निरायास अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं; जबकि हिंदीभाषी प्रतियोगी उसे सप्रयास ग्रहण करते हैं और उसमें सप्रयास विचार व्यक्त कर पाते हैं; क्योंकि अंग्रेजी उनके लिए आरोपित भाषा है, संस्कारसिद्ध अथवा जन्मसिद्ध भाषा नहीं। इस अभिव्यक्ति-क्षमता के कारण अहिंदीभाषी अपेक्षाकृत ज्यादा उच्च सफलता प्राप्त करते हैं, अन्यथा बुद्धि तो हिंदीभाषियों के पास भी है। यदि भाषा का अवरोध समाप्त हो जाए तो इनका एकाधिकार भी समाप्त हो जाएगा। इसी

भावी चिंता के कारण वे प्रादेशिक भाषाओं के प्रति खड्गपाणि बने हुए हैं। तात्पर्य यह कि दक्षिण भारतीयों (विशेषत: मद्रासियों) के हिंदी-विरोध-आंदोलन के पीछे कोई सैद्धांतिक और न्यायोचित आधार नहीं है। एक ओर वे अपनी प्रादेशिक भाषा का संरक्षण चाहते हैं और दूसरी ओर संपर्क-भाषा के रूप में अंग्रेजी को भी सुरक्षित रखे हुए हैं, ताकि वे इसके एकाधिकारी बने रहें। इस संदर्भ में पं. नेहरू के आश्वासन का मिथ्या दावा किया जाता है। पं. नेहरू विख्यात प्रजातांत्रिक विचारक और व्यापक मानवीय हितों के साधक रहे हैं। भारतीय संविधान में शपथ और संकल्पपूर्वक जो भाषा-विषयक व्रत धारण किया गया था, उसकी अवधि बीत चुकी है। 14 सितंबर, 1949 को पारित किया हुआ राजभाषा विधेयक पंद्रह वर्षों बाद कार्यान्वित कर दिया जाना चाहिए था, परंतु प्रमादवश हमने तब भाषा-समस्या को अर्हता प्रदान नहीं की और किसी न किसी व्याज से राष्ट्रभाषा हिंदी की अवहेलना की। अब जबकि राष्ट्र के हर कोने से अपनी भाषा की पुकार उठी है- हमने पूरक विधेयक द्वारा अनिश्चित काल के लिए अंग्रेजी को लाद दिया है। हिंदी-विरोधियों का आरोप है कि हिंदी बरबस लादी जा रही है और 'हिंदी साम्राज्यवाद' की सृष्टि हो रही है; जबकि अपनी भाषा का प्रचार करना उसे लादना नहीं होता। लादना उसे कहते हैं, जब दूसरों की भाषा को जनभावना के विरुद्ध अनिवार्य रूप से प्रतिष्ठित किया जाता है। भाषा-प्रेम के कारण किसी भी विदेशी भाषा का अध्ययन किया-कराया जा सकता है, पर अपनी भाषा की कीमत पर उसे स्थापित करना सर्वथा अप्रजातांत्रिक है।

निष्कर्ष यह है कि हिंदी के लिए यह अस्तित्व-संघर्ष आवश्यक है। उसके समक्ष उच्च शिक्षा का माध्यम बनने की चुनौती है। इस दृष्टि से अनेकानेक ग्रंथों के अनुवाद हुए तथा हो रहे हैं। संप्रति हर विषय की काफी पुस्तकें उपलब्ध भी हैं। माध्यम के रूप में अनिवार्यत: स्वीकार कर लेने के बाद प्रकाशक भी इस ओर आकृष्ट होंगे और अविलंब अनेक अनूदित पुस्तकें प्राप्त हो जाएँगी। हिंदी के माध्यम से विज्ञानादि की शिक्षा उसी प्रकार दी जा सकेगी, जैसे रूसी, चीनी अथवा जापानी भाषा में दी जाती है। आज की विद्यार्थी-पीढ़ी जो साधिकार अंग्रेजी नहीं सीख पाती, हिंदी का आश्रय लेकर ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा पाएगी, मौलिक चिंतन करेगी और परिणामत: वैज्ञानिक अभिवृद्धि होगी। सुविधा की दृष्टि से अभी वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली को तत्सम रूप में ही स्वीकार करना होगा। हाँ, यथासमय उसे स्थानांतरित किया जा सकता है। सुगमता की दृष्टि से कृत्रिम हिंदी (जटिल शब्दावली) का प्रयोग न करके यत्र-तत्र अंग्रेजी-मिश्रित हिंदी का प्रयोग भी हो सकता है। अंग्रेजी के माध्यम से अध्ययन करने वाला भारतीय विद्यार्थी अस्सी प्रतिशत श्रम भाषा समझने, शब्दकोश देखने और अर्थ निकालने में व्यय करता है और शेष बुद्धि से सामग्री को ग्रहण करता है। यदि भाषा की असुविधा न रह जाए और वह पूरी क्षमता विषय-सामग्री को ग्रहण करने में लगाए तो निश्चय ही यह उसके लिए और राष्ट्र के लिए हितेय होगा।

पगोडा

श्री राजेश हिंदुराव आंबवाड
प्रबंधक (वाणिज्य-पूर्व खंड)

बर्मा जापान, चीन एवं अन्य पूर्वीय देशों में भगवान बुद्ध अथवा किसी संत के अवशेषों पर निर्मित स्तंभाकृति मंदिरों के लिये किया जाता है। इन्हें स्तूप भी कहते हैं। एक अनुमान यह है कि पगोडा शब्द संस्कृत के "दगोबा" के अपभ्रंश रूप में प्रयुक्त हुआ होगा। बर्मी ग्रंथों में पगोडा लंका की भाषा सिंहली के शब्द "डगोबा" का विगड़ा रूप बताया गया है और डगोबा को संस्कृत के शब्द धातुगर्भा से संबंधित कहा गया है, जिसका अर्थ है "पुनीत अवशेषों की स्थापना का स्थल"। फो मिन्ह पगोडे हनोई में दिन्ह प्रांत में स्थित हैं जो तुक मेंट हेलमेंट लोको विंग वार्ड में स्थित हैं। यह हनोई के दक्षिण में 90 किलोमीटर में स्थित हैं।

इस पगोडे के दो भाग हैं :

(1) फो मिन्ह शिवालय (2) फो मिन्ह टावर।

पगोडे प्राय: सूचीस्तंभीय (पिरैमिड आकार के), गुंबदीय अथवा बुर्ज की आकृति के होते हैं। 13 मंजिलों और 200 फुट ऊँचाई तक के पगोडे बने हैं। भारत तथा पूर्वी एशिया के पगोडों के शिखर पर एक मस्तूल पर बहुत सी राजकीय छतरियाँ लगी हुई होती हैं। भारत में पगोडे प्राय: मंदिरों के द्वार पर अथवा मुख्य मूर्तिस्थल के ऊपर बनाए जाते हैं। चीन तथा जापान के पगोडों में स्तंभ वर्गीय, बहुभुजीय अथवा वृत्तीय आकृति का होता है। उसमें अनेक, बहुधा पाँच, मंजिलें होती हैं। प्रत्येक मंजिलें पर बाहर को निकलती हुई छतें होती हैं जिनमें काँसे की घंटियाँ लटकी होती हैं। संपूर्ण ऊँचाई लगभग 150 फुट होती है और भवन पत्थर, ईंट अथवा लकड़ी का बना होता है। नीचे की मंजिल में मूर्तियों अथवा मंदिरों की स्थापना की हुई होती है। स्याम देश में पगोडा को "फ्रा" कहते हैं और यह या तो बेलनाकार बुर्जयुक्त सूचीस्तंभ होता है या पतले कुंतल शिखर युक्त एवं घंटाकार होता है।

भारत में बहुत से शांति स्तूप है, उनमें प्रमुख ग्लोबल विपश्यना पगोडा मुंबई, दीक्षाभूमि स्तूप नागपुर और बुध स्मृति पार्क पटना हैं।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा मुंबई

- केंद्र मैं विश्व का सबसे बड़ा पत्थर का बना गुंबद (हाल) हैं जिसमें 8000 लोग एकसाथ बैठकर ध्यान कर सकते हैं।

- आश्चर्य की बात यह है कि ये गुंबद बिना किसी खंबे के बनाया गया हैं। इस गुंबद की ऊंचाई लंबाई 29 मिटर हैं, जबकि इमारत की ऊंचाई 96 मिटर हैं।
- पगोडा में विपश्यना ध्यान पाठ्यक्रम निशुल्क करवाया जाता हैं यह कोर्स एक दिन या उससे भी ज्यादा दिन का हो सकता है इसकी अधिक जानकारी के लिए ग्लोबल विपश्यना पगोडा मुंबई की वैबसाइट से भी ले सकते हैं।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा निर्माण का इतिहास

- इसका निर्माण कार्य वर्ष 2000 में शुरू हुआ था, इस पगोडा में तीन उप- गुंबद हैं। पहला सबसे बड़ा गुंबद का निर्माण 2006 मैं पूरा हुआ था। उसके बाद महात्मा बुद्ध के अस्थि अवशेष यहा स्थापित कर दिये गए। इसके बाद दूसरे और तीसरे गुंबद का निर्माण वर्ष 2008 में पूरा हुआ हैं।
- इसमें एक संग्राहलय के अंदर गौतम बुद्ध के गैर और सांप्रदायिक शिक्षा को दर्शाया गया हैं।
- ग्लोबल विपश्यना पगोडा के गुंबद की नीव बसाल्ट की बनी है तथा गुंबद राजस्थान से लाया गया बलुआ पठार से बना है।
- बलुआ पठार के ब्लॉकों का वजन बहुत ही ज्यादा होता हैं तथा चुने का गारा का उपयोग बीच में अंतराल को भरने के लिए किया जाता हैं। इसके चारो ओर संगमरमर बिछाया जाता हैं।
- गुंबद के ऊपरी स्थानों पर कुछ असली सोना चड़ाया गया हैं, जबकि शेष पगोडा सोने के रंग से रंगया गया हैं।

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिसर निम्नलिखित चीजें मौजूद हैं :

1. दुनिया का सबसे बड़ा मेंडिटेशन हाल
2. बुद्ध के जीवन पर आधारित संग्रहालय
3. उत्तर और दक्षिण दिशा मैं दो छोटे पगोडा
4. पुस्तकालय और अध्यन कक्ष
5. गुंबद के चारों और परिक्रमा पथ
6. प्रशानिक भवन
7. घूमने के लिए भूमिगत पार्क

भारत का प्रसिद्धतम पगोडा तंजौर में है। यह बहुत सुंदर और भारी है। इसका ऊपरी भाग लंबाकार 100 फुट का है और उसपर मूर्तिकला तक्षण का बहुत बारीक काम किया हुआ है। उड़ीसा प्रदेश में कोणार्क में नवीं शती ईसवी में बना एक काला पगोडा है। यह सूर्यमंदिर है और हिंदू मंदिरों की भाँति बना है। इसकी केवल तीन मंजिलें शेष हैं।

बर्मा में लगभग प्रत्येक गाँव में, जंगल में, मार्गों पर और प्रत्येक मुख्य पहाड़ी में पगोडे मिलेंगें। इनमें से अधिकांश धार्मिक दानशील व्यक्तियों द्वारा बनवाए गए हैं। वहाँ विश्वास प्रचलित है कि इनके निर्माण से पुण्य की प्राप्ति होती है। बर्मा के पगोडे प्राय: बहुभुज की बजाय गोलाकृति के होते हैं। उन्हें डगोवा अथवा चैत्य कहा जाता है। वहाँ का प्राचीनतम चैत्य पगान में वुपया में है। यह तीसरी शती ईसवी में बना हुआ बताया जाता है। दसवीं शती में बना म्यिंगान प्रदेश का नगकडे नदाउंग पगोडा, सातवीं अथवा आठवीं शती में बना प्रोम का

बाउबाउग्यी पगोडा, 1059 ई. में बना पगान का लोकानंद पगोडा, तथा 15वीं शती में बना सगैंग का तुपयोन पगोडा भी विख्यात हैं। परंतु सबसे अधिक महत्वपूर्ण पेगू के श्वेहमाउडू पगोडा और रंगून के श्वेडगोन पगोडा को माना जाता है। श्वेडगोन पगोडा पवित्रतम समझा जाता है और सबसे अधिक प्रभावोत्पादक है। कहा जाता है, यह पहले केवल 27 फुट ऊँचा बनाया गया था और फिर 15वीं शती में इसे 323 फुट ऊँचा बना दिया गया। इसमें भगवान तथागत के आठ बाल और तीन अन्य बुद्धों के पवित्र अवशेष स्थापित बताए जाते हैं। इस पूरे पगोडे पर स्वर्णपत्र मढ़ा हुआ है। इसीलिये इसे स्वर्णिम पगोडा भी कहा जाता है। रंगून में लगभग दो हजार वर्ष पुराना सूले पगोडा और प्राचीन परंतु अब पुनर्निर्मित वोटाटांग पगोडा भी महत्वपूर्ण हैं।

चीनी पगोडे प्राय: स्मारक होते हैं। ये ईंट, कांचवत् चमकाए हुए खर्पर अथवा चीनी मिट्टी के बने और हाथीदाँत, हड्डी तथा पत्थर के काम से सजे होते हैं। इनकी आकृति प्राय: अष्टभुजी होती है और ये कई मंजिलों में धीरे-धीरे ऊपर की ओर पतले होते चले जाते हैं। प्रत्येक मंजिल की छत किनारे पर ऊपर को मुड़ी हुई होती है और वहाँ से घंटियाँ लटका करती हैं। प्रत्येक छत के कोनों में सजावटी काम भी हुआ रहता है। चीन में तीन से लेकर तेरह मंजिल तक के पगोडे हैं, परंतु प्राय: मंजिलें नौ होती हैं। किसी किसी चीनी पगोडे में प्रत्येक मंजिल को एक सीढ़ी जाती है। पगोडों के निर्माण में धातु का उपयोग कदाचित् कहीं नहीं होता।

चीन में पगोडे भारत से गए और चीन भर में बहुत बड़ी संख्या में बने। वहाँ का सबसे अधिक आश्चर्यजनक पगोडा नैकिंग का चीनी मिट्टी का अष्टभुज स्तंभ था जो 1412 ईसवी में बना था और जो 1856 में ताइपिंगों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। यह 200 फुट ऊँचा था। इसका व्यास 40 फुट था। इसकी दीवारों पर बाहर की ओर बढ़िया नीली चीनी मिट्टी के पत्थर लगे हुए थे। विविध मंजिलों में कुल लगभग 150 घंटियाँ लटकी हुई थीं। चीन में विश्वास प्रचलित था कि पगोडे जल और वायु, उपज और मनुष्यों के स्वास्थ्य एवं व्यवहार सब पर लाभदायक प्रभाव डालते हैं। कहा जाता है कि ताइपिंगों ने इनके लाभकारी प्रभाव को मिटाकर अपनी योजनाओं को सफल बनाने के लिये चीन के अधिकांश पगोडों को यांग सी नदी के मैदानों में गिरा दिया था। चीन के पगोंडो में पीकिंग का तेरह मंजिला तंगचाउ पगोडा, वहीं का नौमंजिला तांगचाउ पगोडा, कैंटन का फुलहरा पगोडा और शांघाई तथा निंगपो के कुछ पगोडे भी विख्यात हैं।

जापान में पगोडे बौद्ध धर्म के साथ चीन से आए। जापानी पगोडे प्राय: लकड़ी के बने होते हैं।अधिकांश वर्तमान जापानी पगोडे 17वीं शताब्दी के बने हुए हैं और मंदिरों में हैं। वहाँ का प्रसिद्धतम पगोडा होरियूजी मंदिर में है। यह ईसवी सन् 607 में कोरियो द्वारा बनवाया गया था। यह 100 फुट ऊँचा है। इसमें पाँच मंजिलें हैं। परंतु जापान में 13 मंजिलों तक के पगोडे हैं। निक्की नगर में तोशोगू मंदिर का पगोडा, 647 ई. में बना होकीजी पगोडा, 680 ई. में बना तिमंजिला यकुशीजी पगोडा और अष्टभुज चौमंजिला बेत्शो पगोडा भी विख्यात हैं।

लंदन में भी वहाँ के क्यू उद्यान में एक विख्यात पगोडा है। इसका निर्माण चीनी नमूने पर हुआ है। इसे 1761 ई. में वास्तुविद सर विलियम चेंबर्स द्वारा बनाए गए अभिकल्प के अनुसार तैयार किया गया था।

मेरा प्रिय दोस्त

श्री सिमनलाल आर्य
सहायक (राजभाषा अनुभाग)

वैसे तो मेरे बहुत से दोस्त हैं लेकिन एक खास दोस्त है, जो मेरे बेहद करीब है, जिसको मैं अपनी सभी बातें बताता हूँ। यह दोस्त सिर्फ मेरे ही करीब नहीं है बल्कि हमारी दोस्ती को हम दोनों के परिवार वाले भी जानते हैं।

मेरा प्रिय दोस्त श्री विजय बापू सावंत है। सच ही कहा गया है कि –'सच्चा मित्र एक खजाने की तरह होता है'। यदि किसी ने अपने जीवन में एक भी सच्चा मित्र पा लिया तो मानो सब कुछ पा लिया है। सच्चा मित्र पाना सरल काम नहीं है। यह एक ऐसी धरोहर है जिसका मूल्य लगा पाना संभव नहीं है। इस धरोहर के सहारे मनुष्य कठिन से कठिन समय से भी बाहर निकल आता है। भगवान के द्वारा मनुष्य को परिवार मिलता है लेकिन मित्र वह स्वयं बनाता है।

ऐसी ही कहानी मेरी और मेरे दोस्त श्री विजय बापू सावंत की है। जब हम दोनों अगस्त, 1986 में पहली बार माझगांव डॉक लिमिटेड कंपनी के कार्मिक विभाग में मिले तो एक दूसरे के परिचय के साथ बातचीत शुरू हुई थी। मेरा दोस्त उस समय एकदम हट्टा-कट्ठा था और मैंने सोचा इसके साथ दोस्ती बनानी पड़ेगी क्योंकि भविष्य में किसी के साथ कहीं कुछ होगा तो ये काम आएगा।

मेरे दोस्त का स्वभाव एकदम सीधा-सादा था और आज भी है। कोई भी बात वह सोच-समझकर ही कहता है। हम दोनों एक ही डिपार्टमेन्ट में काम करते थे और धीरे-धीरे हमारी दोस्ती बढ़ती गयी और अपनी व्यक्तिगत बातें तब से लेकर आज तक एक दूसरे को बताते हैं।

जब सन् 1995 में कंपनी में सर्विस ब्रेक लगा तो हम सब दोस्तों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गयी थी। हम लोग हर गुरुवार के दिन कंपनी के गेट पर आते थे और नौकरी पर फिर से रखते हैं या नहीं, इसका पता लगाकर वापस चले जाते थे। उस समय ऐसी हालत थी कि पैसे के अभाव में हम कंपनी से मलाबार हिल तक पैदल जाते थे और उसके बाद भायखला तक पैदल आते थे। मगर कहीं काम का

बंदोबस्त नहीं हुआ। नौकरी की तलाश में मैं और मेरा दोस्त भांडूप से थाना, वर्तक नगर पैदल गए, मगर नौकरी का बंदोबस्त कहीं नहीं हो पाया।

मैं नेरुल, नवी मुंबई में रहता था और मैं जब नौकरी ढुंढ़ते-ढुंढ़ते एक सोसायटी के गेट पर पहुंचा, तो मेरी वहाँ पुराने परिचित व्यक्ति से मुलाक़ात हो गयी। वे मुझे पहचानते थे। उन्होंने मुझे देखकर कहा –'यहाँ किस लिए आए हो?' मैंने कहा, एमडीएल में मेरा सर्विस ब्रेक लगा हुआ है और नौकरी की तलास में आया हूँ। उन्होंने मुझे कहा क्या वाचमैन में ड्यूटी करोगे? मैंने तुरंत हाँ कर दिया। उन्होंने मुझे उसी दिन शाम से वाचमैन की ड्यूटी पर रखवा दिया था। रात में इतने मच्छर थे कि पूरी रात परेशान हो गया। जब मैं कंपनी में नौकरी का पता करने आया तो मेरा दोस्त सावंत मुझे मिला और कहा, कहाँ है अभी फिलहाल काम पे? तो मैंने कहा– सोसायटी में वाचमैन की नौकरी मिली है। मेरे दोस्त ने कहा- 'मेरे लिए भी कहीं काम होगा तो देखना'। मैंने मेरे परिचित व्यक्ति को बताया कि मेरा दोस्त भी नौकरी की तलाश कर रहा है और माली का काम जानता है। मेरे परिचित व्यक्ति ने कहा -उन्हे इधर बुलाओ, पूरी सोसायटी का गार्डन के काम का ठेका दिलाऊँगा। उनकी सोसायटी में बहुत जान-पहचान थी। मैंने अपने दोस्त को भांडूप से नेरुल बुलाया और उनसे उसे मिलाया। जैसे ही उन्होंने मेरे दोस्त को देखा वे उसे भी पहचान गए। वे मेरे दोस्त से बोले सब सोसायटी का गार्डन का ठेका दिलवाता हूँ फिकर मत करो। उन्होंने मेरे दोस्त से उस पूरे दिन अपने गार्डन का काम करवाया और शाम के समय बिना रुपये दिये मेरे दोस्त को कहा 'कल एक किसमिस का छोटा पेड़ भी लेके आना मेरे लिए।' मेरा दोस्त दूसरे दिन अपने जेब से तीन सौ रुपयों में किसमिस का छोटा पेड़ लेकर आया और उनके बगीचे में लगाया और दिनभर भूखे पेट गार्डन का काम किया है। उन्होंने मेरे दोस्त से लगभग चार दिन तक फ्री में काम करवाया। चार दिन तक फ्री में बगीचे का काम करने के बावजूद भी न सोसायटी का ठेका मिला न मेहनत और किसमिस के पेड़ के रुपए। सच कहा गया कि 'जो किस्मत भीख नहीं देता माँगने वह राज क्या देगा करने'। ऐसा ही मेरे दोस्त के साथ हुआ है। उसी सोसायटी में मेरे दोस्त ने और मैंने अन्य लोगों के घर, खिड़की के काँच, फर्स आदि साफ किये। फिर हमें जो रुपए मिलते थे हम दोनों आपस में बांट लेते थे। बहुत-सी घटनाएँ हैं जो मेरे दोस्त और मैंने कंपनी में ब्रेक लगने के समय झेली हैं। हम 13 वर्ष तक अस्थायी रहे हैं। इस दौरान हम सबने ऐसी आर्थिक, मानसिक तकलीफ झेली है कि आज हम कितने भी सम्पन्न हो जाएं, मगर सन् 1995 से दिसंबर 1997 की गरीबी को कभी नहीं भूलेंगे।

हम लोग 8 जनवरी 1998 से परमानेंट हुए हैं। मगर हम लोगों ने कैसी-कैसी मुसीबते झेली हैं, जब याद करते हैं तो आखों में आँसू आते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ऐसी आर्थिक विपत्ति किसी पर न आए। कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि ऐसी आर्थिक तंगी न झेली होती तो आज हम अपने बच्चों को इतना कामयाब न करते।

मेरा दोस्त विजय सावंत कोरोना काल के समय 31 मई 2020 को घर से ही सेवानिवृत्त हुआ और उनके मन में और मेरे मन में यह बात आज भी खल रही है कि कंपनी में मेरे दोस्त का कोई विदाई समारोह न हो पाया। मगर करते क्या? उस समय कोरोना काल चल रहा था और आज भी मैं अपने दोस्त को कहता हूँ कि यदि आप और मैं सकुशल रहें तो मेरी सेवानिवृत्ति के दिन आपका भी साथ में सेवानिवृत्ति सत्कार करूंगा।

मेरा दोस्त कहता है कि मेरी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है और मैं कहता हूँ जब तक मैं मुंबई में हूँ आपको कुछ नहीं होने वाला है। कारण कि मुझे आप जैसा दोस्त जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक चाहिए।

मेरे जीवन के संघर्षपूर्ण मार्ग पर चलते हुए मेरे दोस्त श्री विजय सावंत ने मेरे साथ अनेक मुसीबतों में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दिया है। मेरे प्रिय दोस्त ने मेर साथ बुरे वक्त में भी दिया है। हम दोनों आपस में बिना किसी संकोच से हर बात एक-दूसरे को बतातें हैं। यदि कभी मेरी गलती होती तो मुझे समझाता है। वह बड़ों का सम्मान करता है और सबके साथ अच्छा व्यवहार करता है।

जैसे कहा गया है कि हर व्यक्ति को मित्र की आवश्यकता होती है और एक सच्चा मित्र जीवन का बरदान है। यदि हमारा मित्र सच्चा होगा तो वह हमें बुरी आदतों से दूर रखेगा और चाहे दुःख के क्षण हो या सुख के क्षण, हमेशा साथ देगा। ऐसा ही मेरे प्रिय मित्र श्री विजय सावंत है।

इसलिए सबको मेरे दोस्त जैसा मित्र खोजना चाहिए जो शुद्ध आचरण वाला हो तथा ईमानदार हो। एक नीति श्लोक में कहा गया है- "राज दरबार से लेकर शमशान तक और परम दुःख से लेकर चरम सुख तक जो साथ दे, वही सच्चा मित्र है। सच्चा मित्र जीवन का अनुभव सर्वश्रेष्ठ मित्र होता है। यह एक ऐसा मोती है, जिसे गहरे सागर में डूब कर ही पाया जा सकता है। मित्रता की कीमत मित्रता होती है। इसका मूल्य रूपए, पैसे से नहीं चुकाया जा सकता है। एक सच्चा मित्र मनुष्य की सोई हुई किस्मत को जगा सकता है और भटके को सही रह दिखा सकता है। ऐसा ही मेरे दोस्त श्री विजय सावंत है। यदि मेरी दोस्ती श्री विजय सावंत से न हुई होती तो मैं कंपनी से लेकर मुंबई में नहीं टिक सकता था। मेरे जीवन में मेरी पत्नी के बाद मेरे दोस्त का बड़ा योगदान है जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया है। इसलिए मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मेरा दोस्त इस जन्म में तो मिल गया मगर अगले जन्म में भी मुझे मिले।

मेरा कहना है कि एक सच्चा मित्र आपको ऊंचाई तक पहुंचा सकता है और एक कपटी मित्र अपने स्वार्थ के लिए आपको पतन के रास्ते पर पहुंचा सकता है। जो आपके मुंह पर आपके सगे बने और पीठ पीछे आपकी बुराई करे ऐसे मित्रों से सावधान रहना चाहिए।

अत: मित्र का चुनाव सबको बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। इसी आपबीती कहानी के साथ सबको हाथ जोड़कर प्रणाम !

घमंडी बुद्धिमान

श्री कल्पेश अहिरे

स्ट्रक्चरल फैब्रिकेटर (यार्ड- 12652)

एक व्यापारी था, वह बहुत बुद्धिमान था। उसका बुद्धि लब्धि अथवा यूं कहें बौद्धिक स्तर (आइक्यू) किसी बड़े वैज्ञानिक जितना था। लेकिन यह बुद्धिमान अपनी बुद्धि और होशियारी पर बहुत घमंड करता था। इतना घमंड की वह सामने वालों को अपने आगे कुछ समझता ही नहीं था। कभी किसी की मदद भी नहीं करता था। घमंड ही सब कुछ है ऐसा वह मानता था।

जब भी वो किसी व्यक्ति से बात करता तो उसके शब्दों में, उसके व्यवहार में, उसकी हाव-भाव में, घमंड साफ-साफ दिखाई देता था। उसके ऐसे बातों और आचरण से सामने वाले लोग दुःखी हो जाते थे लेकिन उसे इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसका व्यापार अच्छा चलता था फिर भी वो हमेशा दिमाग लगाकर इस बात की फिराक में रहता था कि कैसे वह कम से कम समय में अधिक से अधिक दौलत कमा पाए। एक ब्राह्मण इस व्यापारी का स्कूल के समय से मित्र था। ब्राह्मण भी समझदारी में कुछ कम न था लेकिन इस ब्राह्मण ने अपनी बुद्धि को भगवान की भक्ति और धर्म ग्रंथों को पढ़ने में लगा दिया था।

व्यापारी अपने ब्राह्मण मित्र का भी कई बार अपमान कर दिया करता था। लेकिन आध्यात्मिक को पा चुका ब्राह्मण कभी उसकी बातों का या व्यवहार का बुरा नहीं मानता। ब्राह्मण ने अपनी सच्ची भक्ति और समर्पण से भगवान का दर्शन कर लिया था इसलिए वो अब किसी भी बाहरी वस्तुओं या दुनियां से विचलित नहीं होता था। भगवान का साक्षात्कार कर चुके इस ब्राह्मण के पास कुछ **अद्भुत** शक्तियां भी आ गई थी जिससे वह अपनी कल्पना शक्ति से कई सारी चीजों का सृजन या विनाश कर सकता था।

जब व्यापारी को इस बात की खबर हुई तो उसने अपने ब्राह्मण दोस्त की शक्तियों का फायदा उठाने का सोचा। व्यापारी ने अपने दोस्त से कहा, "मुझे भगवान की सीमाओं के बारे में बताओं और वो क्या-क्या कर सकते हैं, इसके बारे में जानकारी दो।"

ब्राह्मण बोला, "मेरे भगवान की कोई सीमा नहीं है। वह जो कर सकते हैं वह कोई नहीं कर सकता। उनके लिए पूरा समुंदर एक बूंद समान है। पूरा हिमालय एक कण समान है। हजारों वर्ष 1 मिनट के समान है और करोड़ों रूपये 1 के समान है।

चालाक व्यापारी इसी मौके की तलाश में था। जैसे ही ब्राह्मण ने पैसों की बात की तो व्यापारी तुरंत ब्राहमण से बोला, "अगर ऐसी ही बात है तो मुझे

अपने भगवान से बोलकर सिर्फ 1 रुपया दिला दो।" दरअसल व्यापारी परोक्ष रूप से ब्राहमण से बोलना चाहता था कि उसे करोड़ों रुपया चाहिए जो उसके भगवान के लिए एक रुपया के सामने है।

ब्राह्मण ने अपनी आंखें बंद की और ध्यान में बैठ गया। कुछ सेकंड बाद ब्राह्मण ने आंखें खोली और अपने व्यापारी मित्र से बोला, "भगवान तुम्हें एक रुपया देने के लिए तैयार है, बस उन्होंने तुम्हें सिर्फ 1 मिनट इंतजार करने के लिए कहा है।"

इस तरह से अपने आप को बहुत बड़ा बुद्धिमान समझ रहे व्यापारी को उसके ब्राह्मण मित्र ने उसी के तरीके से मात दे दी। भगवान के लिए करोड़ों रुपयों का मूल्य 1 रुपया है तो हजारों सालों का मूल्य भी 1 मिनट की है, इसी तरह से अगर व्यापारी को करोड़ों रुपयें चाहिए तो उसे हजारों साल इंतजार करना ही पड़ेगा।

सभापति की जिम्मेदारी

श्री मनोज जाधव
क्लर्क-ए (संरक्षा विभाग)

बात उन दिनों की है, जब बापू अफ्रीका में सत्याग्रह कर रहे थे। उस दौरान उन्हें जरूरी काम से लंदन जाना पड़ा। लंदन में भारत के बहुत से नवयुवक पढ़ते थे। उन युवकों ने एक सभा करने का विचार किया। सभा का कार्यक्रम बड़ा ही सादा था- पहले भोज, फिर भाषण और तो सब ठीक हो गया था, पर सभा के लिए युवकों को कोई सभापति नहीं मिल रहा था। आखिर में गांधीजी सभापति बनने के लिए तैयार हो गए। लेकिन इसके साथ ही उन्होंनें एक शर्त रखी- भोजन में मांस नहीं होगा। युवकों ने बात मान ली। सब जरूरी सामान खरीदे गए। सब अपने-अपने निर्धारित कार्यों में व्यस्त हो गए।

किसी ने कुर्सियां लगाने का काम संभाला तो किसी ने हॉल की सजावट का काम हाथ में लिया। एक ने बर्तन-बासन ठीक-ठाक किए तो दूसरे ने चूल्हा संभाला। कुछ रोशनी-बत्ती के प्रबंध में लग गए तो कुछ पानी जमा कर रहे थे। कोई तरकारी काटने में लगा और कोई पकवान बनाने में जुट गया। उन्हीं के बीच एक दुबला-पतला व्यक्ति भी था। उसने थालियां मांजने और फर्श को साफ करने का काम संभाल लिया। बाकी लोग तो बीच-बीच में सुस्ता भी लेते, पर वह अपने काम में ऐसे लगा रहा जैसे उसे काम से ही ताजगी भी मिल रही हो।

जब सभा शुरू करने का समय करीब आया तो सभा के उपप्रधान वहां आए। सहसा उनकी दृष्टि उस दुबले-पतले युवक पर पड़ी, तो वे हैरान रह गए। उनके मुंह से निकाला, मिस्टर गांधी आप क्यों यह काम कर रहें हैं? इस पर उन्होंने कहा, मैं बस अपनी जिम्मेदारी निभा रहा हूँ और जिम्मेदारी तो हम सबको निभानी ही चाहिए। कृपया मुझे इससे न रोंके। उन्होंने बाकायदा खाना परोस, थालियां लगाई, सबके साथ भोजन किया और फिर सभापति का भाषाण भी दिया।

सफर- मुंबई से लद्दाख और स्पीति घाटी का

श्री अविनाश ब्राम्हणे
सिनियर मेल नर्स (चिकित्सा विभाग)

साथियों, मुझे बताने में बहुत खुशी हो रही है कि मैं अविनाश अशोक ब्राम्हणे (सिनियर मेल नर्स, चिकित्सा एवं आपातकालीन विभाग, माझगांव डॉक शिपबिल्डर, मुंबई) और अन्य तीन दोस्तों के साथ दिनांक 06 जून, 2023 से 23 जून, 2023 तक 6185 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए मुंबई-लेह लद्दाख - स्पीति घाटी - मुंबई की मोटरसाइकल यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की। मेरे अन्य तीन दोस्तों के नाम हैं- सुमित माटे (मैनेजर केमिकल, नायट्रिक एसिड प्लांट), सिद्धार्थ मिसाळ (एच एन रिलायंस हॉस्पिटल) और प्रथमेंश शिगवन (एच एन रिलायंस हॉस्पिटल)। हर बाइकर अपने जीवनकाल में एक बार लेह लद्दाख बाइक यात्रा पर जाने का सपना देखता है। हम सबने भी देखा था और अब वो पूरा हो गया। हालाँकि ये यात्रा सुनने को तो रोमांचक है, लेकिन वास्तविकता में हमें बहुत सारी चुनौतियों / (बाधाओं) का सामना करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

जब मंत्रमुग्ध कर देने वाली लेह लद्दाख यात्रा की बात आती है तो पुरानी कहावत "हर जगह सुंदरता है, आपको बस चारों ओर देखना है" बिल्कुल सच है। लेह लद्दाख की यात्रा प्राकृतिक दृश्यों की खूबसूरती, बर्फ से ढके पहाड़ों, ऊबड़-खाबड़ पर्वतीय रास्तों, ऊंची-ऊंची चोटियों, खतरनाक मार्गों और गर्जनशील बाइक इंजनों के अनुभव के बारे में है। संक्षेप में, लद्दाख बाइक यात्रा पर जाना एक सवार की अच्छी भावनाओं और अटूट भावना के बारे में है।

लद्दाख जाने का सबसे अच्छा समय गर्मियों के मौसम में अप्रैल से जुलाई के बीच होता है। लद्दाख में सिर्फ पोस्टपेड सेवाएं उपलब्ध है, तो उधर जाने के पहले अपनी फोन की पोस्टपेड सेवाएँ शुरू करें। कृपया लद्दाख जाने से पहले ऑफ़लाइन मैप डाउनलोड करें।

इस दौरे में हमने NH1, NH44 और अन्य क्षेत्रीय राजमार्गों और सड़कों पर यात्रा की हैं। हमने लगभग सभी मौसमों जैसे गर्मी, बारिश, सर्दी और यहां तक की उत्तरी क्षेत्र में कुछ स्थानों पर बर्फबारी का भी अनुभव किया है।

लेह लद्दाख में आकर्षण का एक भंडार है, जो अत्यधिक प्राचीन सुंदरता से भरा हुआ है। यह खूबसूरत जगह अपने आकर्षक मठों, खूबसूरत पर्यटक स्थल, शानदार बाजारों के लिए जाना जाता है। इनमें से सबसे प्रमुख पैंगोंग झील, चुंबकीय पहाड़ी, नुब्रा घाटी, त्सो मोरीरी झील, लामायुरु मठ, शांति स्तूप, शे मठ, कारगिल, रॉयल लेह पैलेस, अलची मठ शामिल हैं। यहाँ की दिलकश और शांत नजारा एक अलग दुनिया का अनुभव दिलाता है जो भारत में कहीं भी नहीं पाया जा सकता है। मेरे खुद के अनुभव से मुझे स्पीति घाटी का अनुभव बहुत ही खतरनाक, प्रभावशाली ओर रहस्यमय लगा। बाइक चलाते समय बहुत सारी चुनौतियां का सामना करना पड़ा।

हमारी यात्रा मुंबई - गुजरात - राजस्थान - अंबाला - जम्मू - श्रीनगर - कारगिल - लेह - नुब्रा घाटी - पैंगोंग झील - सिस्सु - ग्राम्फू - चंद्रताल झील- नाको - ताबों - केलोंग - शिमला - ग्वालियर - इंदौर से गुजरते हुए वापस मुंबई में समाप्त हुई।

श्री राजू कुमार चौधरी
हिन्दी अनुवादक

बचपन की यादें

जब हम रो नहीं पाते,
ठिक से सो नहीं पाते।
जब हम खेल नहीं पाते,
तब बचपन याद आता है...

जब चिंता सताती है,
हमारे तन को खाती है।
जब मन नहीं लगता,
तब बचपन याद आता है...

जब हम टूट जाते हैं,
तब अपने रुठ जाते है।
जब सपने सताते हैं,
तब बचपन याद आता है...

बच्चे हम रह नहीं जाते,
बड़े हम हो नहीं पाते।
खड़े हम रह नहीं पाते,
तब बचपन याद आता है...

किसी के संग हम हो नहीं पाते,
अकेले हम रह नहीं पाते।
किसी को कह नहीं पाते,
तब बचपन याद आता है...

बात निकल जाने दो

जो दिल में छुपी है बात ,
बात निकल जाने दो।

बड़ी लम्बी है यें रात ,
रात निकल जाने दो।
कब तलक रुठे रहोगे, तुम मुझसे,
आँखों में छुपी बरसात ,
बरसात निकल जाने दो।

जो भी दिल में छुपी है बात ,
बात निकल जाने दो।।

ऐसे नजरें छुपा के बैठी हो,
गम को सीने में दबा के बैठी हो।
बड़ी मुश्किल में है जज़्बात,
जज़्बात निकल जाने दो।
जो भी दिल में छुपी है बात,
बात निकल जाने दो।।

माझगांव डॉक और पनडुब्बी निर्माण

श्री कैलाश सिंह
प्रबंधक (हल-पूर्व खंड)

पनडुब्बी एक परिदृश्य

पनडुब्बियों के उपयोग ने विश्व का राजनैतिक मानचित्र बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पनडुब्बियों का सर्वाधिक उपयोग सेना में किया जाता रहा है और ये किसी देश की नौसेना का विशिष्ट हथियार बन गई हैं। यद्यपि पनडुब्बियां पहले भी बनाई गई थी, किन्तु ये उन्नीसवीं शताब्दी में लोकप्रिय हुई तथा सबसे पहले प्रथम विश्व युद्ध में इनका जमकर प्रयोग हुआ। सन् 1620 से लेकर अब तक पनडुब्बियों की तकनीक और निर्माण में आमूल बदलाव आया। सन् 1950 में परमाणु शक्ति से चलने वाली पनडुब्बियों ने डीजल चलित पनडुब्बियों का स्थान ले लिया। इसके बाद समुद्री जल आक्सीजन ग्रहण करने वाली पनडुब्बियों का भी निर्माण कर लिया गया। इन दो बड़े अविष्कारों से पनडुब्बी निर्माण क्षेत्र में क्रांति सी आ गई। आधुनिक पनडुब्बियां कई सप्ताह या महिनों तक पानी के भीतर रहने में सक्षम हो गई।

द्वितीय विश्वयुद्ध में भी पनडुब्बियों का उपयोग परिवहन के लिए सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए किया जाता था। आजकल इनका प्रयोग पर्यटन के लिए भी किया जाने लगा है। काल्पनिक साहित्य संसार और दिलचश्प चलचित्रों के लिए पनडुब्बियों का प्रयोग किया जाता है। पनडुब्बियों पर कई लेखकों ने पुस्तकें भी लिखी है। इन पर कई उपन्यास भी लिखे जा चुके हैं। पनडुब्बियों को दुनियाँ के छोटे परदे पर कई धारावाहिक में दिखाया गया है। होलीवूड के कुछ चलचित्रों जैसे 'आक्टोपस1', 'आक्टोपस2' और 'द कोर' में समुद्री दुनिया के मिथको को दिखाने के लिये भी पनडुब्बियों को दिखाया गया है।

पनडुब्बी के भीतर कृत्रिम रूप से जीवन योग्य सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। आधुनिक पनडुब्बियां अपने चालक दल के लिए प्राणवायु आक्सीजन समुद्री जल के विघटन की प्रक्रिया से प्राप्त करती है। पनडुब्बियों में कार्बन-डाई-आक्साइड को अवशोषित करने की भी व्यवस्था होती है, ताकि पनडुब्बी के भीतर कार्बन-डाई-आक्साइड ना भर जाए। आक्सीजन की पर्याप्त उपलब्धता के लिए पनडुब्बी में आक्सीजन जेनेरेटर लगा होता है जो एक टंकी आक्सीजन से भर देता है। आग लगाने पर बचाव के लिए भी व्यवस्था की जाती है। आग लगने की स्थिति में जिस भाग में आग लगी होती है उसे शेष पनडुब्बी से विशेष रूप से बने परदों की सहायता से अलग कर दिया जाता है ताकि विषैली गैसे बाकि पनडुब्बी में न फैले।

भारतीय नौसेना में पनडुब्बी:

विश्व की सभी प्रमुख नौसेनाओं के समान ही भारतीय नौसेना ने भी अपने बेड़े में पनडुब्बियों को सम्मिलित किया है। भारतीय नौसेना के बेड़े में वर्तमान में 16 डीजल चालित पनडुब्बियां हैं। ये सभी पनडुब्बियां मुख्य रूप से रूस या जर्मनी में बनी हुई हैं। वर्ष 2010-2011 से इस बेड़े में **माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड द्वारा 06 और पनडुब्बियों को शामिल किया जा रहा है।** भारतीय नौसेना पोत (आईएनएस) अरिहंत (अरि :- शत्रु, हंत: मारना अर्थात शत्रु को मारने वाला) परमाणु शक्ति चालित भारत की प्रथम पनडुब्बी है। इस 6000 टन के पोत का निर्माण केंद्र विशाखापत्तनम में 2.9 अरब डालर की लागत से किया गया है। इसको बनाने के बाद "भारत" वह छठा देश बन गया जिनके पास इस प्रकार की पनडुब्बियां हैं।

वर्तमान भारत में पनडुब्बी का निर्माण :

वर्तमान में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स

माझगांव डॉक लिमिटेड में निर्मित – पी75 के अंतर्गत स्कोर्पिन क्लास सबमरीन

लिमिटेड (भारत) में निर्मित कलवरी क्लास पर महत्वपूर्ण तथ्य कलवरी क्लास सबमरीन/पनडुब्बी डीजल इलेक्ट्रिक अटैक सबमरीन स्कॉर्पीन क्लास पर आधारित भारतीय नौसेना के लिए बनाई गई है। क्लास और सबमरीन का नाम पूर्व में मौजूद पनडुब्बियों पर आधारित है। सबमरीन की डिजाइन फ्रेंच नेवल डिफेंस और एनर्जी कंपनी (डीसीएनएस) के द्वारा की गई है।

विभिन्न श्रेणियों पर एक विहंगवालोकन :

- नाम : कलवरी क्लास
- बिल्डर्स (निर्माता) : माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड
- संचालक : भारतीय नौसेना
- पूर्ववर्ती : सिंधुघोष क्लास और शिशुमार क्लास

- उत्तरवर्ती : परियोजना-75 आई क्लास सबमरीन
- लागत रुपये 23652 करोड़ रुपये (290 बिलियन या 45$3.6 बिलियन छह सबमरीनों के लिए)
- अनुमानित- रुपये 3942 करोड़ (रुपये 48 बिलियन या युएस $600 मिलियन प्रति यूनिट के लिए)
- फर्स्ट कमीशन : 2017
- योजनाबद्ध : 6 सबमरिन
- बनाए : 6 सबमरीन
- योजनाबद्ध : 6
- पूरी की हुई : 6
- इन कमीशन : 4
- सक्रीय कार्यात्मक : 4

सामान्य विशेषताएं

- प्रकार: अटैक पनडुब्बी
- विस्थापन: सरफेस 1615 टन्स
  सबमर्गेड 1775 टनस
- लम्बाई : 67.5 मीटर (221 फिट 5 इंच)
- बीम: 6.2 मीटर (20 फिट 4 इंच)
- ऊंचाई: 12.3 मीटर (40 फिट 4 इंच)
- ड्राफ्ट: 5.8 मीटर (19 फिट)
- प्रापल्शन: 5 x MTU 12V.376 SE 84 डीजल इंजन
- 360 बैटरी सेल्स
- डीआरडीओ पीएएफसी फ्यूल सेल एआईपी (एक्सपेक्टेड टू बी एडेड इन 2023)
- गति: सरफेस 11 Knots (20 Km/n, 13 mph)
  Submerged 20 Knots (37 Km/n, 23 mph)
- सीमा : 6500 नॉटिकल मिल्स (12000 किमी) at 8 किमी सरफेस
  550 नॉटिकल मिल्स (1020 किमी) at 4 किमी सबमर्गेड तक
- टिकाव : 50 दिन
- परिक्षण गहराई : 350 मीटर (1150 फिट)
- सैन्यकर्मी : 8 अधिकारी
  35 नाविक
- इलेक्ट्रॉनिक वरफेयर : सी303/एस एंटी-तोर्पेड़ो
- अर्ममेंट : 6x533 mm (21in) torpedo tubes for 18
  sm39 Exocet anti-ship missiles
  s3sm (MICA) anti-air missiles
  30 mines in place of torpecloes

महत्वपूर्ण घटनाएँ

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत में ही नहीं अपितु विश्व में पनडुब्बी निर्माण में अग्रणी स्थान रखता है। यह समय-समय पर पोत और पनडुब्बी को भारतीय नौसेना को सुपुर्द करता रहा है। इस कड़ी में पनडुब्बी के संदर्भ में निम्नलिखित तिथियाँ महत्वपूर्ण हैं:-

नाम	पताका	यार्ड	बिल्डर्स	जलावतरण	कमीशिनिंग	स्थिति
कलवरी	521	11875	**माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड**	27/10/2015	14/12/2017	सक्रिय
खंडेरी	522	11876		12/01/2017	28/09/2019	सक्रिय
करंज	523	11877		31/01/2018	10/03/2021	सक्रिय
वेला	524	11878		06/05/2019	25/11/2021	सक्रिय
वागीर	525	11879		12/11/2020	23/01/2023	सक्रिय
वाग्शीर	526	11880		20/04/2022	अप्रैल 2024 (अपेक्षित)	समुद्री परिक्षण

आई एन एस खंडेरी

आई एन एस वेला

पर्यावरण के प्रति हमारी वचनबद्धता

श्री नरेश गायकवाड
क्लर्क ए (मा.सं. क. सं.)

जल प्रबंधन

कुशल जल प्रबंधन स्थिर जल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें आवंटन, वितरण और जल संसाधनों का प्रभावी रूप रणनीतियाँ एवं नीतियाँ शामिल है। उसी के अनुरूप, एमडीएल ने अपने एसएसए (सबमरीन सेक्सन एसेंबली) कार्यशाला में शून्य तरल निर्वहन के लिए एक मेकेनिजम का कार्यान्वयन किया है जिसमें सीवेज उपचार संयंत्र, ग्रे अपशिष्ट जल उपचार संयंत्र, ऑयल वाटर ट्रीटमेंट प्लांट वर्ष 2016 -17 में शामिल है। सीवेज उपचार संयंत्र को घरेलू सीवेज का 2 एम3/घंटा तक उपचार करने के लिए वांछित गुणवत्ता को पानी के रूप मे डिस्चार्ज किया जा रहा है या पुन: उपयोग किया जा रहा है फ्लशिंग/बागवानी के लिए डिजाइन किया गया है। सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट बीओडी (जैविक ऑक्सीजन डिमांड), सीओडी (रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड) और टीएसएस (टोटल ससपेंडेड सालिड) स्तर उपचरित जल में और शुद्ध जल का कीटाणुशोधन हाइपोक्लोराइट घोल को कम करने पर केन्द्रित है।

ग्रे वाटर ट्रीटमेंट प्लांट (जीडब्ल्यूटीपी) को अपशिष्ट जल की वांछित गुणवत्ता के 4 एम3/घंटा और पुन: उपयोग किए जाने के किए डिजाइन किया गया है। जीडब्ल्यूटीपी, बीओडी (जैविक ऑक्सीजन डिमांड), सीओडी (रासायनिक ऑक्सीजन डिमांड) और टीएसएस (टोटल सस्पेंडेड सालिड) स्तर उपचारित जल को कम करता है, हाइपोक्लोराइट घोल का उपयोग करके क्लेरिफाईड पानी को कीटाणु रहित करता है और साफ किये गये पानी को छानते हैं सक्रिय कार्बन का उपयोग करके दबाव रेत फिल्टर और सोखना फिल्टर किए गए पानी में टीएसएस स्तर को कम करने के लिए एक्टीवेटेड कार्बन फिल्टर प्रयोग के द्वारा अवशोषण करता है।

तेल जल उपचार संयंत्र को 5 एम3/घंटा तक वांछित गुणवत्ता का ऑयल वाटर उपचार करने के लिए और पुन: उपयोग किए जाने के लिए डिजाइन

किया गया है। संयंत्र के विभिन्न इकाइयाँ कलेक्सन संप, रॉ सॅलइज ट्रांसफर पंप हैं, नालीदार प्लेट इंटरसेप्टर, फाइनल होल्डिंग टैंक, ऑयल सेंसर इकाई और ट्रासंफर पंप संयंत्र के विभिन्न इकाइयां हैं।

ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा संरक्षण हमारे पर्यावरणीय प्रभाव को न्यूनतम करने और संरक्षित बहुमूल्य संसाधन ऊर्जा खपत कम करने का अभ्यास है। इसमें ऊर्जा-कुशलता प्रौद्योगिक, इमारतों, उद्योगों और परिवहन में ऊर्जा के उपयोग को अनुकूलित करना और प्राथमिकाता वाले व्यावहारिक परिवर्तनों को बढ़ावा देना आदि शामिल है ताकि जिम्मेदार ऊर्जा उपयोग को प्राथमिकता मिले। हमारी ओर से एक प्रयास के रूप में, हमने कुछ बदलाव किया है और हमारे डीएचजी उत्सर्जन कम करने के किए हमारी प्रक्रियाओं में संकलन किए गए हैं। ये इस प्रकार हैं:

- हम बिजली के नवीकरणीय स्रोत का उपयोग करते हैं ।
- एमडीएल ने अपने नवीकरणीय भाग के रूप में सौर पैनल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए स्थापित किए हैं, जिससे इसके उत्तर, दक्षिण, पूर्व और अनिक चेंबूर यार्ड मे स्थित 390 किलोवाट और 650 किलोवाट की ऊर्जा प्रदान करना है।
- हमारे पास इलेक्ट्रानिक गोल्फ कारें (4 सीटर और 8 सीटर), हैं जो ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान नहीं देता।

अपशिष्ट प्रबंधन

अपशिष्ट प्रबंधन स्थिर विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। अपशिष्ट प्रबंधन अभ्यास की प्रभावशीलता सुनिश्चित करना, सतत निगरानी और मूल्यांकन किया जाता है। नियमित ऑडिट और निरीक्षण से क्षेत्रों की पहचान करने में मदद मिलती है सुधार और पर्यावरण विनियम का अनुपालन सुनिश्चित होता है।

एमडीएल, एमडीएल यार्ड में उत्पन्न कूड़े/कचरा का निपटान वर्ष 2010-11 से गैर-सरकारी संगठनों/ सहकारी संस्थाओं के माध्यम से कोई शुल्क नहीं/कोई भुगतान नहीं आधार पर कर रहा है। यह दिन-प्रतिदिन के आधार पर सफलतापूर्वक और सिस्टम से संतोषजनक ढंग से काम कर रहा है। एमडीएल इन सहकारी संस्थाओं का विकास कर शून्य कचरा स्थिति प्राप्त करने में सक्षम है। एमडीएल की एक अलग संचित स्क्रैप यानि एम.एस./लकड़ी/को साफ करने के लिए अनुबंध तांबा/एल्यूमिनियम और फर्नीचर आदि सहित अन्य सभी रबर, कागज आदि जैसे कूड़ा-करकट पदार्थों का एक अलग रेट कांट्रेक्ट है। प्लास्टिक को एनजीओ/ठेकेदार द्वारा प्रतिदिन एकत्र किया जाता है और सामग्री के पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण के लिए उनके द्वारा क्रमबद्ध किया जाता है। सुचारु और सुरक्षित निपटान की सुविधा के लिए लकड़ी, धातु, लौह, अलौह स्क्रैप के लिए अलग-अलग भंडारण डिब्बे प्रदान किए गए हैं और अन्य विभिन्न स्क्रैप यानि धातु /लकड़ी आदि की नीलामी निपटान सेल के माध्यम से की जाती है।

संघर्ष

श्री सुनील राणे
क्लर्क ए (मा.सं. क. सं.- पू. खं.)

संघर्ष नाम से ही आप लोग समझ गये होगें कि मैं किस संघर्ष की बात कर रहा हूँ।

हाँ, आप बिल्कुल सही समझे है, मैं जीवन के संघर्ष की बात कर रहा हूँ। संघर्ष एक ऐसे लड़के की जो आज भी कहीं न कहीं किसी न किसी जगह हम लोगों के बीच संघर्ष कर रहा है। मेरी आप से विनती है कि अगर वो आप को कहीं भी मिल जाये तो आप उसे झूठा ही सही मगर यह आश्वासन दे दीजिएगा कि तुम्हारी नौकरी हो जायेगी, मगर तुम संघर्ष करते रहो, संघर्ष न छोड़ना।

चलिए में अब आपको उसके बारे में बतलाता हूँ। विकास मेरे बचपन का मित्र है। विकास को बचपन में पढ़ाई में मन नहीं लगता था। जब भी उसकी माँ उसे पढ़ने के लिए कहती तो वो तुरन्त अपने दोस्तों के साथ खेलने भाग जाता। जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ उसे पढ़ाई की महत्ता समझ में आने लगी। वह जिस ट्यूशन में पढ़ने जाता वह शिक्षक उसे रोज बुरा-भला कहता कि तुम कभी पास नहीं होगे। यह बात उसे बहुत बुरी लगती। जिन मित्रों ने किसी समय उसे पढ़ाई से दूर किया था उन्हीं कुछ मित्रों ने उस पर भरोसा जताया और उसे यह विश्वास दिलाया कि तुम भी पढ़ सकते हो। शायद उन्हें ऐसा विश्वास था कि विकास मंद बुद्धि नहीं है। बस, उसका मन पढ़ाई की तरफ नहीं लगता। उन मित्रों से हौंसला और भरोसा पाकर विकास मन लगाकर पढ़ने लगा। जैसे उसने मन में यह ठान ली हो कि उसे कुछ कर गुजरना है तो फिर उसे कौन रोकने वाला था।

उसने माध्यामिक परीक्षा में प्रथम श्रेणी में पास करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया, इसीलिए ये मेरा मानना है कि खून के रिश्ते से कई ऊपर होता है मित्रता का रिश्ता। खून का रिश्तें जबर्दस्ती का रिश्तें होते हैं जिसे न चाहते हुए भी इंसान को निभाना पड़ता है। चाहें वह माँ का हो, पिता का, भाई का या फिर बहन का। ये सारे खून के रिश्तें होते हैं, लेकिन हैरानी की बात ये है इन रिश्तों को हम नहीं चुनतें ये सारे रिश्ते हमें कुदरत के द्वारा प्राप्त होते हैं जिस पर हमारा कोई बस नहीं होता। मगर दोस्ती का रिश्ता एक ऐसा रिश्ता होता है जिसे हम अपनी इच्छा से चुनते हैं, जिसे चुनने का केवल हमारा अधिकार होता है।

विकास मेरा ऐसा ही मित्र था जिसे शायद मैंने ही चुना था। बहुत शांत, सुशील और ईमानदार। जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसकी पढ़ाई में रुचि बढ़ती गयी। उसकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी

इसलिए वह अपनी पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए ट्युस्न पढ़ाना आरम्भ कर दिया इससे वो कभी घर खर्च में अपना योगदान दे दिया करता था। विकास माँ-बाप का इकलौता लड़का था लेकिन परिवार में उसकी और तीन बहनें भी थी। उसके पिता अब काम नहीं कर पाते थे उसके पिता रोज़ एक ही बात उसकी माँ से कहते जिस दिन मेरे बेटे की नौकरी मिल जायेगी उस दिन में काम पर जाना बन्द कर दूगां। अब मुझसे इस उम्र में नारियल के पेड़ पर चढ़ा नहीं जाता, न ही उतनी आमदनी होती है। विकास का परिवार बहुत बड़ा था। सारे परिवार की जिम्मेवारी उसी के कन्धों पर थी। उसके चाचा-चाची उसी के साथ रहते थे। उनका भी भरण-पोषण विकास के पिता ही करते थे। इसी कारण परिवार का खर्च बहुत ही बढ़ गया था। इधर विकास विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ। अख़बार में उसकी फोटो भी छपी जिसे देख वह बड़ा प्रसन्न हुआ। शायद वही उसकी आख़री खुशी थी फिर जिन्दगी ने उसे खुश होने का मौका नहीं दिया।

एक दिन किसी हादसे में उसके चाचा गुज़र गये। अब उसकी चाची और उनका पाँच साल के लड़के की जिम्मेदारी विकास पर आ गयी। विकास जो कुछ भी ट्यूशन से कमाता सारा पैसा अपनी माँ के हाथों में लाकर रख देता। विकास ने सोचा, ट्यूशन से घर नहीं चलने वाली क्योंकि उसके पास ज्यादातर गरीब घर के बच्चे ही पढ़ने आते हैं अगर वो उनसे जिद्द करके पैसा मागेगा तो कहीं वे पढ़ने आना बंद न कर देंगे, क्योंकि किसी जमाने में विकास की स्थिति भी कुछ इसी तरह थी। एक दिन बचपन में फीस के कारण विकास अपने एक मित्र के पास पढ़ने चला गया उसका वह मित्र कहीं भी ट्यूशन नहीं पढ़ता था क्योंकि उसकी हालत विकास से भी खराब थी। तो विकास जो भी ट्यूशन में पढ़ता या लिखता अपने मित्र को जरुर बताता, जब उसके मित्र ने पूछा -कि तुम इतनी सुबह-सुबह मेरे घर में क्या कर रहे हो? उसने उससे कहा चलों आज हम दोनों साथ-साथ पढ़ते हैं। उसके मित्र ने कहा - इस वक्त तो तुम्हें ट्यूशन में होना चाहिए। उसने कहा मेरे पास फीस के पैसे नहीं है अगर मैं बिना फीस लिये गया तो वे मुझे क्लास से बाहार निकाल देंगे, इसलिए मैंने तय किया है जब तक मुझे फीस नहीं मिलती मैं तुम्हारे पास आकर ही पढूंगा। उसके बाद उसका मित्र उठा और बाहर चला गया। विकास तब तक सारी किताबें निकाल कर पढ़ना शुरु कर दिया इसके थोड़े ही देर बाद उसका मित्र वापस आया और विकास की सारी किताबें उसकी बैंग में भरने लगा। विकास ने कहा- ये क्या कर रहे हो, तुम्हारा मेरे साथ पढ़ने का मन नहीं है। उसके मित्र ने कहा– मन तो बहुत है पर तुम इस वक्त ट्यूशन जाओ और यह कहते हुए फीस के 300 रुपये उसके जेब में रख दिये। विकास ने उससे कहा– तुम्हारे पास इतने पैसे कहां से आए? उसने कहां - ये पैसे मुझे मेरे मालिक ने दिये है जिनके यहाँ में अख़बार देने का काम करता हूँ, सोचा था इन पैसों से नई चप्पल लूंगा, चप्पल पूरी फट-सी गई है पर मुझे अब ऐसा लगता है मुझसे ज्यादा तुम्हें इन पैसो की जरुरत है।

परिश्रम का फल

श्री राजा बनोथू,
पीए कम क्लर्क (पू. खं.)

सुमित बिहार के एक छोटे से गाँव में रहता था जो सिवान से कुछ 20 किलोमीटर दूर था। वह रोज़ सुबह अपने पिताजी के साथ खेतों में जाके काम करता था लेकिन उसे सिविल सर्विसेज़ की तैयारी करनी थी। घर में पैसों की बहुत तंगी थी पर फिर भी उसने किसी तरह ग्रैजुएशन पूरा कर ही लिया। एक दिन उसने अपनी इच्छा अपनी माँ को बताई जो कि एक सामान्य गृहिणी थी। सुमित की बात सुनकर उसकी माँ बहुत भावुक हो गयी और उन्होंने सोचा कि अपने होनहार बेटे के लिए वो ज़रूर कुछ उपाय निकालेंगी। जब उस दिन सुमित के पिताजी घर आये तो उसकी माँ ने उनसे इस बारे में बात की। पिताजी ने कहा कि बरसात और कीड़ों के कारण पिछले साल फसलों को बहुत नुकसान पहुँचा। उन्होंने अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश की कि ऐसे हालातों में पढ़ाई पर खर्च करना बिल्कुल भी संभव नहीं है। सुमित की माँ यह बात सुनकर निराश ज़रूर हुई फिर भी उन्होंने उम्मीद नहीं छोड़ी, उन्होंने अचार और पापड़ के गृह उद्योग की शुरुआत की। कुछ ही महीनों में अच्छे खासे पैसे आने लगे और अच्छी बारिश के कारण फ़सलें भी काफी अच्छी हुईं। अब सुमित के घर की आर्थिक स्थिति थोड़ी बेहतर होने लगी। सुमित ने यह सब महसूस किया लेकिन अपने माता-पिता पर बोझ न डालने के कारण से उसने फिर से अपनी इच्छा की बात नहीं की। एक दिन जब वह सुबह उठा तो उसने देखा कि डाकिया चिट्ठी छोड़ कर गया है, उसे खोलने पर उसने देखा कि उसमें ट्रेन की टिकट और कोचिंग क्लास की जानकारी है। अचानक पीछे से पिताजी ने उसके कंधे पर हाथ रख कर बोला, बेटा, अपनी पढ़ाई पूरी कर और अपना आई. ए. एस. बनने का सपना साकार कर। सुमित की आँखें नम हो गयी और उसने अपने माता–पिता से वादा किया कि वह एक दिन उनका नाम रोशन करेगा और फिर अगले ही दिन, वो दिल्ली के लिए रवाना हो गया।

किसी भी छोटे शहर के लड़के के लिए दिल्ली जैसे बड़े शहर में कदम रखना बहुत ही बड़ी बात है। सुमित को इस बात का अहसास शायद ही था कि उसका रास्ता कितना कठिन होने वाला है। मुखर्जी नगर, जो सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए काफी मशहूर है, वहाँ सुमित ने एक मकान किराये पर लिया। छोटे से कमरे के उसे पाँच हज़ार देने पड़े और साथ में हिमांशु नाम के लड़के के साथ वो कमरा साझा भी करना पड़ा। सुबह आठ बजे से लेकर शाम के सात बजे तक उसकी क्लासेज़ चलती थी और बीच में मुश्किल से बस खाने का समय मिल पाता था। बाहर का खाना खाने से सुमित की तबियत कई बार ख़राब हो जाती थी। कई सारी मुश्किलें झेलने के बाद

भी सुमित ने अपने लक्ष्य से ध्यान नहीं भटकाया और पढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हिमांशु भी होनहार लड़का था और वह और सुमित मिलकर पढ़ाई किया करते। रोज़ घर से पिताजी का फोन आता तो सुमित उन्हें हौसला देता कि वह अपना और उनका सपना ज़रूर पूरा करेगा। कई बार ऐसा भी होता कि दिन भर पढ़ने के बाद भी सवाल हल नहीं होते, इससे कई बार सुमित निराश होकर बैठ जाता। हिमांशु फिर उसे समझाता कि यह जीवन के उतार–चढ़ाव का एक हिस्सा है और इसे हिम्मत के साथ पार करना होगा। कभी–कभी पैसे ज़्यादा खर्च हो जाने के कारण, सुमित रात का खाना नहीं खाता था ताकि वह अधिक न खर्च कर दे। परीक्षा का समय पास आता जा रहा था और सुमित की घबराहट बढ़ रही थी। सुमित के पिताजी ने उसका हौसला बढ़ाया और उसे खूब मेहनत करने की नसीहत दी। सुमित ने भी उम्मीद नहीं छोड़ी और लगातार कड़ी मेहनत करता रहा। आखिर एक साल के लम्बे इंतज़ार के बाद परीक्षा की घड़ी आ ही गयी।

सुमित, सुबह भगवान की पूजा करके और फ़ोन पर माँ पिताजी का आशीर्वाद लेकर, घर से निकला। रास्ते में उसे ट्रैफिक का सामना करना पड़ा और उसे लगा कि शायद वह परीक्षा के लिए देर हो जायेगा। किसी तरह सुमित निर्धारित समय से पाँच मिनट पहले एग्जाम सेंटर पहुँच गया। अपनी जगह पर जाकर, उसने एक गहरी सांस ली और शांति से बैठ गया। जब घड़ी में नौ बजे तो प्रश्न पत्र उसके सामने आया और उसे देखकर वह दंग रह गया। सुमित को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि उसे लगभग सभी प्रश्नों के उत्तर आते थे। वह ख़ुशी से फूले नहीं समा रहा था। अपने मन को शांत कर के, उसने लिखना शुरू किया और तय समय सीमा से दस मिनट पहले ही उसका पेपर पूरा हो गया। उसे लगा कि शायद उसका कोई प्रश्न छूट गया होगा तो उसने फिर से उत्तर पुस्तिका जाँची। उसने सारे सवालों के जवाब लिख लिए थे। कोई गलती न रह गयी हो इसलिए उसने एक बार फिर सारे जवाबों की जाँच कर ली। एग्ज़ाम समाप्त होने के बाद, जब परीक्षा हॉल से निकला तो उसने देखा कि सभी छात्र चर्चा कर रहे थे। उसने सीधा मेंट्रो पकड़ी और घर की ओर रवाना हो गया। हिमांशु भी कुछ देर बाद घर पहुँचा। दोनों ने एक दूसरे से पूछा कि उनकी परीक्षा कैसी हुई। हिमांशु ने कहा कि थोड़े से मुश्किल प्रश्न थे लेकिन हल हो गए। सुमित की बात सुन कर हिमांशु दंग रह गया और उसने सुमित से कहा कि इस बार सुमित शायद पूरे देश में अव्वल आ सकता है।

सुमित को विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी परीक्षा उम्मीद से इतनी बेहतर जा सकती है। उसने घर पर बताया कि उसकी परीक्षा बहुत ही अच्छी गयी है और उम्मीद है कि परिणाम भी अच्छा ही आएगा। यह बात सुन कर उसके माता पिता दोनों बहुत ही खुश हो गए। सुमित ने अगले चरण की तैयारी शुरू कर दी जो कि कुछ दो महीने बाद होनी थी। सिविल सेवा की परीक्षा तीन चरण में होने वाली परीक्षा है और इसलिए यह सबसे कठिन परीक्षाओं में शामिल है। सुमित और ज़्यादा हौसले और विश्वास के साथ अपनी अगले चरण के लिए पढ़ने लगा। आखिर दस दिन बाद, पहले चरण का परिणाम घोषित हुआ और

सुमित शीर्ष विद्यार्थियों में शुमार था जिनके सबसे अधिक अंक थे। अब कुछ ही दिनों में दूसरे चरण की परीक्षा थी जिसके लिए सुमित पूरे जी-जान से मेहनत कर रहा था। हिमांशु भी पहला चरण पार कर गया और दूसरे चरण के लिए पढ़ने लगा। दो महीने कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला। दूसरे चरण की परीक्षा में भी सुमित ने बहुत अच्छे से लिखा और वह अपने परिणाम को लेकर बहुत आश्वस्त था। एक महीने बाद जब दूसरे चरण के नतीजे आये तो सुमित की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था, वह इंटरव्यू के लिए सलैक्ट हो गया था। हिमांशु को निराशा हाथ लगी लेकिन उसने सुमित की तैयारी में उसकी मदद करने की ठानी।

अब सुमित थोड़ा बेहतर महसूस कर रहा था और करे भी क्यों न, इतनी कठिन परीक्षा के दो चरण सफलतापूर्वक पार किये थे। हिमांशु ने सुमित की हर तरह से सहायता की और ये सुनिश्चित किया कि पढ़ाई के अलावा सुमित को कोई और काम न करना पड़े। सब्ज़ी लाना या कपड़े धोना और अन्य ऐसे छोटे-मोटे काम सब हिमांशु कर दिया करता जिससे सुमित का समय व्यर्थ न जाए। सुमित पूरी मेंहनत और लगन से तैयारी कर रहा था। यह इंटरव्यू उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण था, उसने पूरे जीवन आई. ए. एस. अधिकारी बनने का सपना देखा था। अचानक गाँव से खबर आयी कि बाढ़ के कारण सुमित के घर में भारी नुकसान हुआ है और पूरे शहर में भारी तबाही हुई है। खबर मिलते ही सुमित ने पिताजी से बात की तो पता लगा कि स्थिति बहुत ही बदतर है और खाने रहने के लिए भी जगह नहीं है। सुमित के पिताजी ने उसे फिर भी हार न मानने और अपनी तैयारी जारी रखने को कहा। अपने जीवन के इतने महत्वपूर्ण मोड़ पर जिंदगी उसका कड़ा इम्तिहान ले रही थी। सुमित कुछ समय परेशान रहा लेकिन फिर उसने सोचा कि इस दल दल से निकलने का एक ही उपाय है। उसे यह परीक्षा किसी भी हालत में पार करनी होगी अन्यथा उसकी और उसके घर की स्थिति कभी नहीं सुधरेगी। एक सप्ताह के अंदर, सिवान में बाढ़ का प्रकोप ख़त्म हुआ और सामान्य जीवन लौट आया। कुछ ही दिन में इंटरव्यू था और अब एक और परेशानी आ खड़ी हुई। सुमित के कम सोने के कारण, वह बीमार पड़ गया और डॉक्टर ने उसे आराम करने की सलाह दी। सुमित बिस्तर पर पड़ा–पड़ा बस यही सोचता रहता कि वह कब ठीक हो जाये और पढ़ना शुरू करे। हिमांशु ने दवाई और हर प्रकार से सुमित का ख्याल रखा और एक तरह से एक भाई का फ़र्ज़ निभाया। एग्ज़ाम से पाँच दिन पहले आखिर सुमित भला चंगा हो गया। सप्ताह–दस दिन न पढ़ने के कारण सुमित का आत्मविश्वास थोड़ा डगमगा सा गया था लेकिन उसने अपना ध्यान बनाये रखा। इतने दिनों की मेंहनत आखिर बेकार थोड़े ही जाती और यही सोचकर सुमित ने पूरे लगन से पढ़ाई की। आखिर इंटरव्यू का दिन आ ही गया। थोड़ा सहमा और घबराया सा, सुमित इंटरव्यू देने पहुँचा। शालीनता के साथ सुमित ने सभी सवालों के जवाब दिए और उसकी सुध बुध से सभी बहुत प्रभावित हुए। इतने कठिन परीक्षा में यह कह पाना मुश्किल था कि सुमित को सफलता हाथ लगेगी या नहीं। सभी बहुत ही उत्सुकता के साथ सुमित के परिणाम का इंतज़ार कर रहे थे और उसकी सफलता की दुआएँ माँग रहे थे।

प्रमोद कुमार की यात्रा...

प्रमोद कुमार अगस्त 2011 से एसबी-डी (एल एंड डब्ल्यूएन) विभाग में कार्यरत हैं। वह एक राष्ट्रीय पैरा टेबल टेनिस खिलाड़ी हैं। कॉन्फ्रेंस रूम और कक्षों की सीमाओं से परे, प्रमोद कुमार टेबल टेनिस कोर्ट पर एक मजबूत प्रतियोगी में बदल जाते हैं।

यह एक ऐसी कहानी है जो सामान्य से परे हैं, कड़ी मेहनत और अटूट विश्वास का ताना-बाना बुनती हैं। ऐसी ही है प्रमोद कुमार की गाथा, जिनकी एमडीएल से इंटरनेशनल टेबल टेनिस कोर्ट सिंगापुर तक की यात्रा असफलताओं से रहित नहीं थी। पैरा राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में प्रमोद के शुरुआती प्रयासों से कोई ठोस परिणाम नहीं मिले। फिर भी, हर असफलता के साथ हतोत्साहित होने की बजाय, उनका संकल्प और भी मजबूत होता गया।

प्रमोद कुमार ने 9 और 10 दिसंबर 2023 को मुन्नार, कराला में आयोजित राष्ट्रीय स्तर के टेबल टेनिस टूर्नामेंट में भाग लिया और ओपन पैरा श्रेणी में कांस्य पदक जीता और इस टूर्नामेंट के बाद वह 13 से 18 मार्च 2024 तक सिंगापुर में आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई हो गया है।

यहां उन्होंने इंटरनेशनल टेबल टेनिस चैंपियंस लीग सिंगापुर में पैरा ओपन कैटेगरी में रजत पदक और वेव ओपन कैटेगरी में स्वर्ण पदक जीता।

यात्रा अभी शुरू हुई है, भविष्य का लक्ष्य एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और पैरालिंपिक खेलों में एमडीएल या भारत का प्रतिनिधित्व करना है ।

राजभाषा संगोष्ठी वर्ष 2023-24

हिंदी संगोष्ठी का संचालन करते हुए श्री प्रकाश चंद्र झा, उप महाप्रबंधक (जनि-कार्य)

टॉलिक के तत्वावधान में एमडीएल द्वारा दिनांक 08 दिसंबर 2023 को आयोजित हिंदी संगोष्ठी में उपस्थित समूह को संबोधित करते हुए श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक।

भारतीय नौवहन निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक कैप्टन बी के त्यागी संगोष्ठी में उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधन करते हुए।

हिंदी संगोष्ठी संबोधित करते हुए टॉलिक सचिव श्री सलीम खान तथा मंच पर बैठे हुए बाएँ से डॉ. राकेश पाराशर, उप निदेशक (प्रशिक्षण), डॉ. विलास झोड़े, मुख्य महाप्रबंधक (एचपीसीएल), कमांडर वी के पुराणिक, निदेशक (स.यो.एवं का), कैप्टन बी के त्यागी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (एससीआईई), श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं बीजू जॉर्ज, निदेशक (जहाजनिर्माण)।

कवि सम्मेलन का आनंद लेते हुए उपस्थित श्रोतागण

10K मैराथन वर्ष 2023-24

मंच पर 10K चैलेंज का आगाज़ करते हुए चियर गर्ल्स

10K चैलेंज मैराथन में उपस्थित प्रमुख अतिथि, पूर्व भारतीय क्रिकेटर श्री दिलीप वेंगसरकर के साथ एमडीएल के वरिष्ठ प्रबंधनगण।

श्री दिलीप वेंगसरकर 10K मैराथन का शुभारंभ करते हुए।

10K चैलेंज में दौड़ते हुए एमडीएल के कर्मचारी एवं उनके परिवार के सदस्यगण।

प्रमुख अतिथि, पूर्व भारतीय क्रिकेटर श्री दिलीप वेंगसरकर को पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

10 K मैराथन के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एवं बीजू जॉर्ज, निदेशक (जहाज निर्माण)

एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ

20 अक्टूबर 2023 में पी15 श्रेणी के तीसरे विध्वंसक इम्फाल की भारतीय नौसेना को सुपुर्दगी

30 अक्टूबर, 2023 में आईएनएस विशाखापतनम (यार्ड 12704) की दूसरी रीडिंग में उपस्थित श्री बीजू जॉर्ज, निदेशक (जहाज निर्माण) के साथ नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी एवं एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण

31 अक्टूबर, 2023 में मिनी मैराथन में भाग लेते हुए प्रशिक्षुगण

मिनी मैराथन में भाग लिए हुए प्रतिभागियों के साथ डॉ. संतोष कुमार मल्लिक, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन) एवं एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण

2 नवंबर 2023 में सागरिका सभागार में सतर्कता जागरूकता और पीआईडीपीआई पर कर्मचारियों के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम पर लघु नाटक प्रस्तुत करते हुए कर्मचारी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान संवेदीकरण कार्यक्रम पर उपस्थित कर्मचारीगण

एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ

एमडीएल आवासीय क्षेत्र में चिल्ड्रर्स पार्क का उद्घाटन करती हुई श्रीमति जयश्री सिंघल के साथ उपस्थित अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मुख्य सतर्कता अधिकारी, निदेशक (जहाज निर्माण), निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक) एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण

एमडीएल आवास में नया उद्घाटित चिल्ड्रर्स पार्क

22.11.2023 में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत एनएसटीआई (प.), दादर में आउटरीच गतिविधि में भ्रष्टाचार पर सभा को संबोधित करते हुए श्री टी जे जेकब, अपर महाप्रबंधक (सतर्कता)

एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ

24 नवंबर, 2023 को मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री महेश चंद्रा द्वारा एमडीएल के अधिकारियों के साथ एक इंटरैएक्टिव सत्र

1 दिसंबर, 2023 में आईएनएस करंज (यार्ड 11877) की दूसरी रीडिंग में उपस्थित कमांडर जसबीर सिंह, निदेशक (पनडुब्बी एवं भारी अभियांत्रिकी) के साथ वरिष्ठ नौसेना अधिकारी एवं एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण

स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत 2 दिसंबर 2023 में स्वच्छता अभियान में भाग लेते हुए एमडीएल के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

दिनांक 9 दिसंबर, 2023 को एमडीएल प्रांगण में सत्यनारायण महापूजा समारोह

सत्यनारायण महापूजा में उपस्थित बार्गेनिंग काउंसिल के सदस्यगण एवं एमडीएल के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारीगण

एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ

26 दिसंबर, 2023 में माननीय रक्षा मंत्री की उपस्थिति में भारतीय नौसेना को आईएनएस इम्फाल की कमीशनिंग की गई

एमडीएल चेयरमैन्स ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 में पुरुष विजेता टीम

एमडीएल चेयरमैन्स ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 में महिला विजेता टीम

कंपनी परिसर में 26 जनवरी, 2024 में गणतंत्र दिवस समारोह के लिए आते हुए कमांडर वासुदेव पुराणिक, निदेशक (समवाय योजना एवं कार्मिक)

26 जनवरी, 2024 के अवसर पर तिरंगे झंडे को सलामी देते हुए श्री बीजू जॉर्ज, निदेशक (जहाज निर्माण)

एमडीएल के कार्यक्रमों की झलकियाँ

श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सेवानिवृत्त समारोह के अवसर पर श्री जॉन अब्राहिम, अपर महाप्रबंधक को पुष्पगुच्छ देते हुए

सेवानिवृत्त समारोह के दौरान कर्मचारी को पुष्पगुच्छ देते हुए श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ श्री अरुण कुमार चाँद, महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

कर्मचारियों के सेवानिवृत्त समारोह को संबोधित करते हुए श्री संजीव सिंघल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

दिनांक 22 मार्च 2024 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 167वीं बैठक

टॉलिक के 71वें बैठक में माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड के राजभाषा गृहपत्रिका को 'उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए डॉ. सुष्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (कार्यान्वयन) पश्चिम एवं एचपीसीएल के वरिष्ठ अधिकारीगण

मुंबई (उपक्रम) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में एमडीएल परिसर में राजभाषा संगोष्ठी एवं कवि सम्मेलन

जलतरंग

माझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड

आईएनएस इम्फाल

राष्ट्र के युद्धपोत एवं पनडुब्बी निर्माता